हांस्यां हरि मिलै

नृसिंह राजपुरोहित

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक—
मानद मंत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी),
बीकानेर (राजस्थान)

पलो संस्करण ११०० (सन् १९७३)

मोल रु ७.५०

मुद्रक—
एजूकेशनल प्रेस,
फड़ बाजार बीकानेर

प्रकाशकीय

लोक मुख माथ साहित्य री प्रयाग निधि हाल तई सुरक्षित है, पण धीरै धीरै विस्मृति रै खाडै में ओभळ हुव है। राजस्थानी लोक गीता अर लोक कथावा नै बचावण सारू तो मोकळा सरावणजोग प्रयास हुया है, पण चुटकला-साहित्य सारू फुटकर प्रयत्न रै सिवाय कोई सावठो प्रयत्न देखणो म आयो कोनी। श्री नृसिंह राजपुरोहित मोकळा बरसां सू लोक मुख मायँ चढयोडा चुटकला 'हास्या हरि मिलै' शीर्षक सू छापा मे छपावता आया है जिणा रो राजस्थानी साहित्य ससार मोकळो स्वागत करयो।

लोक साहित्य री रिछपाळ भी सगम र काय कळापा म आव है इण कारण हास्या हरि मिलै' र अ तगत श्री राजपुरोहितजी र चुटकला सग्रह नै राजस्थानी पढारा आग राखता घणो हरख हुवै। भरोसो है इण पोथी रो आदर हुसी।

श्रीलाल नथमलजी जोशी
मानद मत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (प्रकादमी)
बीकानेर

म्हूँ तो फगत इतरो ईंज केवूं ला

जनम लियां पछ संसार म जीवणो तो सगळा न ई पडै, पण एक जणो तो हसी खुशी मे जीवण बिताय देवै अर दूजो रोवतो भीकतो ऊमर रा दिन मोछा कर। जीव दोनू ई है पण जीवण जीवण म फरक है।

अबखाया, अडचणा अर मुसीबतां मिनखाजूण में छियां रो गळाई साग लागी रव। बां सू आथडणा अर जूझणो साची मरदानी गिणीजै। पण आ रो साम्ही छाती मुकाबलो बो घणी'ज कर सक जिणमे थोडो घणो ई हसी मसखरी रो माद्दो (Sense of humour) हुव। जिको मोटी सू मोटी मुसीबत म खुद हस सक अर दूजा न ई हसाय सक।

कैबत है—लूण बिना तो पूण रसोई—हास्य जीवण रो लूण गिणीज (Humour is the salt of life) इण वास्त इणर बिना मानखै रो जीवण मलूणो है, नीरस है बेस्वाद है।

राजस्थानी एक जीवत अर सबळ भाषा है। ऊन राजस्थानी गद्य पद्य में हास्य मोकळो मिल। नव साहित्य में लिखणो पडला, पण इणसू की फरक नीं पड। राजस्थान रो जनजीवण, जिको जुग जुग सू अभावां अर अबखायां सू भाय डतो आयो हास्य सू पूरो मोळखाण राखै। इणसू अळगो रैव तो बो दुखां रै पाण काळजो फाटन खतम हुय जाव। इण कारण राजस्थानी जनता री जबान माथ हास्य रस्यो बस्यो है।

म्हैं उणम सू थोडो घणो कलमबद्ध करण री कोसीस कीवी है जिको दरिया म एक बूद र उनमान है। भ्रो सगळो हास्य राजस्थान र जनजीवण सू सब धित होवण सू इणमे राजस्थान री धरती री सोरम है लोकजीवण र काळज री धडकण है। जनता री चीज जनता तांई पुगावता मन घणो हरख है।

पोथी छपावण खातर राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी), बीका-नेर नै घणा रग देवता थका म्हू तो फगत इतरो ईंज कवू ला क—

जिंदगी जिंदादिली रो नाव है
मुडदा दिल क खाक जीव है

पुरोहित कुटीर
खाडप (जि बाडमेर)

—नृसिंह राजपुरोहित

हांस्यां हरि मिलै

टीप



राखी

राखी पूनम रै दिन एक भू डो बामण एक कजूस सेठ रै अठै राखी बाधण नै गयो। सेठ उणन एक पाई दिखणा मे दी। बामण नै उण मक्खीचूस माथै अणूती रीस आई। वो पाई उणरै मू डागै फेंकतो थको बोल्यो—पाई रो काई ? पाई'र पाई, नी पाई'र नी पाई।

बामण देवता रो ओ खिलको देख'र सेठ नै ई रीस आयगी। उणे ई तट्ट करती राखी तोडी अर फै कतो थको बोल्यो—राखी रो काई ? राखी'र राखी, नी राखी'र भी राखी !

देवता उठै सू चुपचाप रवानै व्हैगया।



वाडो ठाकर

एकर एक वाडे ठाकर नै कोई अजाण आदमी पूछ लियो, ठाकरा ! आपरै टाबर टीगर कितरा है ?

ठाकर मू छा माथै हाथ फेर नै ठमक सागै बोल्या—म्हारै भाई रै साळै रै च्यार डावडा है। 

चवरी

चवरी में बींद बींदणी बैठा हा। कनै बैठो हो सगायो अर सामैं बैठा बामण। सजोग इसो मिळ्यो कै ब्याव जगा तावड़ा खोलता घर री भाठा पण हा।

होम सरू कियो जितरै एक मकोड़ो निकळ्यो। बींद बोल्या—काई है? काई है?

बींदणी घूंघटा ऊंचा करती बोली—मकोड़ो है मकोड़ो!

सगायो बोल्या—पकड़ ल? पकड़ लूं?

बामण देवता बधू मारै रयता। वे बोल्या—ना रे ना! ठेट जाएला! ठेट जाएला!

इण हुण नै सगळा रा ई पेट दुखणा लागगा।

८

गेहणो - गाठो

एकर एक आदमी घणी हूस सू गेहणो-गाठो घडायो। सगळो ई पै'र ने, बणठण नै सगा गिनायता रै उठै मिळण नै गयो। उणरा मसा ही कै गिनायत उणरा गेहणो देख अर उणरी सरावणा करै पण उठै तो मजाल है किणई बात ई जबान माथै नी लाई।

सझ्या पडगी अर उणने आफरो चढग्यो। खासी ताळ तो गाढ राखी अर पछै पोतै ईज बात चलाई—गिनायता आपरै अठ रा कुत्ता घणा खराब है सा!

क्यू काई बात हुई सा ? गिनायता पूछ्यो।

अरे सा गाम मे वळताई कुत्ता हाऊ हाऊ करता सामै आया और दोळै फिरग्या। एक तो माटो म्हारो भो बेडी वाळा पग पकड लेवतो। वा तो म्हार इण फून रै धणी रामसा पीर लाज राखी सो भडरी इण अगूठी वाळ हायरी नी ता म्हारो मुरकी वाळा कान तोड नाखतो।



बारठजी न्यात मे

एकर एक बारठजी कोई दूजै गाम गया। उठै बाणिया री न्यात जीम री ही। बारठजी बाजी न सातगी भूख लागोडी ही सो माल मलीदा देख नै मूडै मे पाणी आयगो। बाजी पगत मे जाय धस्या।

चोकी मायै आगा पच बैठा हा। बानै भ्रो आदमी को अपरोळो लागो। उणा परूसगारा रै मारफत पूछायो कै बो कुण है ? ओसवाळ है क पोरवाळ है ?

बारठजी नीची घूण घाल्या पडूत्तर दियो—ओसवाळ ! पचा नै बात जची कोनी, उणा पाछो पूछायो—किसा ओसवाळ हो ? दसा कै बीसा ?

बारठजी बाजी देख्यो कै अबै पोल खुल जाएला सो गबा गब मोटा मोटा कवा लेय नै हाथ धोवता बाल्या—कोई दसा नै काई बीसा—म्हे तो हा तेतीसा ! अर बारठजी उठै सू तेतीसा मनाया।



गगाजी री डेडकी

एकर एक मक्खीचूस सेठ गगा न्हाई। वो भू अधारै गगा स्नान नैं गयो। सजोग सू एक बामण ई उठै पूगग्यो। उणं देख्यो कै आज मौको ठीक है। उठै दूजी कोई चीज हाथ वळू ही कोनी सो नदी री रेत लेय नै झट सेठ रै तिलक कियो अर कह्यो आ गगाजी री माटी है, थू चदण करन मान।

सेठ ई मायँ ऊपरलो हो। उण पाणी मे सू लप्प करता एक डेडकी पकडी अर बामण न पकडावता कह्यो—आ गगाजी री डेडकी थू गैया करनै जाण।



मसखरो

एक मसखरै रस्तै चालती लुगाई री मसखरी करली। लुगाई रीसा बळती बोली—सीडो काढया, ठाला भूला, नागडा थारै मा-बैन कोनी सो म्हारी मसखरी करै।

मसखरै हसनै जवाब दियो—म्हारै मा बैन तो है पण लुगाई कोनी।



अमली री झेर

एक र एक अमली दिनूगै उठयो अर अमल री भेर मे अगोछे रै बदळे मिराणै पडी पोतारै लुगाई री काचळी माथै पर लपेट ली। बजार सू चावळ लावणा हा सो वो दुकान माथ पूगो।

दुकान सू कमीज रै पल्लै मे चावळ लेयनै वो घर कानी रवानै व्हियो तो मारग मे पेसाब री हाजत हुई। वो एक बाड कनै बठग्यो। अमल री भेर मे खळखळाट सुणनै अर झाग देख नै ध्यान बाधो कै चावळां रो आदण उफण रह्यो है। झट करता चावळ हाडी मे ओरन पल्लो खाली कर दियो।

खाली पल्लै घरा पूगो तो लुगाई लड़वा लागी—ठाला भूला दुखियारो ओ माथै पर काई बाध्यो है, अर चावळ कठै है? अबै जावती अमली री भेर टूटी। माथै परली काचळी तो हाथ मे ही पण चावळ धूड मे मिळग्या।



बाईसिकल

एक गामठी आदमी पोतारी बेटी नैं सहर म परणाई। जमाई ससुरै कनै एक बाईसिकल री माग कीवी।

ससुरै जमाई री बात सुणी तो पाछो जवाब भेज्यो— जमाई सा नैं अरज कीजो कै बाई तो एका-एक ही, सो आपनै परणाय दी अर सिकल तो जिसी भगवान दीवी जिकी है, घरा जाय नैं नेहचै सूं देख लीजो।



राड अर रंडुवो

एक आदमी पोतारी लुगाई नैं कह्‌यो—रातै तो म्हनै इसो खराब सुपनो आयो कै म्हूं रंडुवो व्हैग्यो। लुगाई बोली— घणो जम्मा थानै, थे क्यूं रंडुवा बणो, राड होवण नैं तो म्हूं त्यार बैठी हूं। आदमी रीसा बळतो बोल्यो—म्हारै जीवता थका थूं राड किया बण सकै ?

लुगाई बोली—तो आप म्हारै जीवता थका रंडुवा किया बणग्या ?



साहब रो कुत्तो

एकर एक साहब रो कुत्तो मरग्यो । साहब रो नौकर भूंड ढाळै रोवण लागो ।

साहब बोल्या- कुत्तै वास्तै आछो ई रोवण लागो रे जूटोडा ! कुत्तै रो काई ? कोई चोखो देखनै दूजो लेय आवाला ।

नौकर रोवतो रोवतो बोल्यो—म्हू कुत्तो मरग्यो इण वास्तै कोनी रोवू हू । म्हूं तो इण वास्तै रोवू हूं कै अबै प्लेटा कुण साफ करैला ? कुत्तो जीवतो हो जितरै तो वो चाट नै साफ कर देवतो हो । अब दूजो कुत्तो न जाणा इण काम मे किनरोक हुस्यार हुवै !



फेर

एकर एक मोटघार रबारी रो ब्याव हो । उणरी मा उणनै समझायन कह्यो—बेटा सझ्या रा थारो ब्याव है, थनै फेरा खावणा है सो एवड चार नै वेगो घर आईजे।

रबारी समझ्यो फेरा कोई साचाणी खावण री चीज है । वो बोल्यो—मा फेरा हाडी मे घालनै राख दीजै । म्हू आस्यू जरै ई खाय लेस्यू ।



गप्पी रा गपोडा

एक गप्पी आपरै साथीडा सागै होटल में बैठो गप्पां मारै हो। घटा भरचा ताई वो पोतारीज दळतो रह्यो कै म्हूं ओ काम कर सकूं, म्हूं वो काम कर सकूं। साथीडा सुण सुण नै उकताय-ग्या। छेवट एक जणै पूछ्यो—ठीक भाई, सै सुण लियो, थूं मग ळाई काम कर सकै है, पण आ तो बता कै थूं काईं नी कर सकै ?

गप्पी हसतो थको बोल्यो—दूजा तो म्हूं सगळाई काम कर सकूं हूं पण होटल रो बिल कोनी चुकाय सकूं।



डोकरी रो रोज

सगा गिनायना मे हुया मरतग रै कारण एक डोकरी रोवण लागी। किण ई मसखरी कीवी। कह्यो—माजी थे तो रोवो फूटरा घणा ओ।

डोकरी बोली—बेटा, नैनी थकी ज बाळ राड व्हैगी ही सो सगळी ऊमर धधो ओ इज कियो है।



जमाई कै जम

एक जमाई सासर मे जायने माटो जम्यो ना पछै जम्यो ई जम्यो। पाछो घरा जावण रो नाम ई नी लेवै। माल मलीदा खावै अर मजा करै। सासरै वाळा आपदा काठा धापग्या। उणां मान मनवार बंद करदी अर माल मलीदा री ठौड़ सूखा टुकड़ा अर राबड़ी देवणी सरू करी, पण वो तो ताई जम्यो रह्यो। थोड़ै दिनां पछै उणनै खेत खळै लिजावण लागा अर उण सूं अबखो काम काज करावण लागा। इत्ता पण माटै जावण रो नाम नी लियो।

छेवट नैनकियै साळै एक तरकीब सोची। उणै एक दिन बैनोईजी नै समाचार दिया कै आपरै माजी रामसरण व्हैग्या है।

बनोई निसासा नाखतो बोल्या—चालो ओ ई छूटयो व्हियो। नी तो फेर डोकरी नै संभाळण खातर घरा जावणो पड़तो।

भूखै घर को जाई

एकर एक कजूस आदमी पोतारी बेटी नै हुकम दियो—छोरी जा, आपणी दुकान मायं जा, उठ म्हारो कोट टिरं है सो कोट मे खीसो अर खीसं मे पीसो। सो पाई को लाईजे साग, पाई को तेल अर पाई को मिरच मसालो। पछै बढिया साग बणाय दीजै।

वा छोरी पण उण बापरी बेटी ही सो बोली – भईसा ! भईसा ! यान पीसा उडावो तो क्यान काम चालसी ?

बाप बोल्यो—जा ए भूख घर की जाई, अठै तो यान ई धूम धाम चालसी।



बोझ्या तो मरैला

एकर एक चारण कोई गामतरै जावै हो। मारग मे जाट साम्ही धकियो। जाट नै देख'र चारण नै मसखरी सूझी। चारण बोल्यो—जाट रे जाट ! थारै माथै माथै टाट !

जाट देख्यो आ जबरी हुई। पाधरै मारग जैवतां माथै म टाट धरदी। जाट नै उतावळ मे तुक तो की उकलियो कोनी तो झट देसी री बोल्यो—चारण रे चारण थारै गळै मे पट्टी।

चारण बोल्यो—तुक जुडी कोनी चोधरी ! जाट बोल्यो—नी जुडी तो नी सही, पण बेटा ! बोझ्या ता मरैला। चारण दबना नीची नाड करनै खमचदा मनाया।



जोधो कहूँ कै राव

लारलो रात ही अर एक भीलडी झूपं मे सूती पोतारै टाबर नै लाड करती थकी रमाडै ही। वा कैवै ही—थनैं जोधो कहू कै राव ! थनैं जोधो कहू कै राव !

इतरै तो उठीनैं सू गाम रा ठाकर घोडै माथै चढयोडा निकळया। भीलडी नैं बोलती सुण'र घोडो थाम्यो अर पूछयो—अरे भीलडी काई कैवै ए थू ?

भीलडी नैं धूजणी छूटगी। उणै झट बात पलटतां कह्यो—काई कोनी अदाता, छोरो रोवै घणो सो म्हू उणनै कहू कै—थनैं गोगो खाए के साप ! थनैं गोगो खाए के साप !

ठाकर मुळकता थका रवानै व्हैग्या।



कविया नै ईनाम

थळी रै एक गाम मे च्यार अणपढ चारण रैवता। उणा विचार किया कै मोकळाई चारण कविनावा बणाय नै फायदो उठाव आपाई कोसिस क्यू ना करा। सा चोखो दिन देखनै च्यारू जणा बारै निकळ्या।

चालता चालता एक गाम मे ठाकर री गढी मे पूगा। ठाकर बाजोट माथै बैठा स्नान करै हा। भैस जिसो सरीर, फर हर करती डाढी अर मोडो मटाक माथो। माथै पर मेट चोपडियोडो हो। ठाकर रो सरूप देख नै उणा पोत पोतारी अक्ल माफक तुकबदी बोलणी सरू करी।

एक बोल्यो—भरर रै बाबा झब्बर।

दूजै कह्यो—माथो जाणै तब्बर।

तीजा बोल्या—डाढी जाणै खरहण।

चोथै कह्यो—भू डा थारा दरहण।

सुणता पाण ठाकर रै झाळ छूटी। हुकम दियो—लागै रे जूत हण हराम खोरा रै! कवि तो उठ सू पगरखा हाथ मे लेय नै नाठा सो घरा आयन पाछळ फेरी। उणा कविता करणी छाडदी।

हलवाणी

थळी गे एक खाती आखे दिन हळ खडनै सझ्या रा वेरै माथै ऊठ पावण नै गयो। हाथ मायली हळवाणी उणै एक कानी धर दी अर ऊठ न पावण लागो। जितरैक तो एक राजपूत ठाकर ई उठै ऊठ लेय नै आया। हळवाणी पडी देख न वारो मन डुळग्यो सो झट लेय नै पोतियै मे घाल ली। खाती ठाकर रो ओ कबाडो निजरा देख लियो पण ठाकर रै मू डामू ड कवण री उणरी हिम्मत नी पडी। खाती बोल्या—म्हैं अबार अठै हळ-वाणी धरी ही अर इतीसीक जेज मे कठीनै गई ? ठाकर ठरकै सागै बोल्या—पोतारी चीज सभाळनै राखो भईया, म्हा वाळी हळवाणी देख, म्हैं पोतियै मे घाल राखी है। यू चीज नै ध्यान सू राखणी चाहिजै।

खातीरै मन मे आग उठगी। वो दूजी कई वाता सू ई काठो धाप्योडो हो सो उणै उद्याळो करण रो विचार कियो।

गाम मे खाती रो घर एक इज हो सो मुखिया न ठा पडी तो खाती नै थावस बधायो अर ठाकर नै बुलाय नै लावण रो कह्यो। उणा विस्वास बधायो कै हळवाणी थनै पाछी देराय देला।

दिनूगै खाती बुलावण नै गयो तो ठाकर माथै ओढ नै सूता हा। बोल्या—भईया, म्हारै पैरण न की कोनी, सफा नागो सूतो हू। थार खाधै माथलो तेवटो देय द तो प र नै चालू। खाती तेवटा देय दियो अर वै दो यू जणा मुखिया कनै पूगा। मुखिया ठाकर नै हळ

वाणो वाचत पूछ्यो तो ठाकर पडुत्तर दियो क खाती ग्रक्कल कूडचो है। उणा इणरी बात किया मानली ? ग्रो तो ग्रवार कंय देवैना के ग्रो म्हारो पै'रण रा तेवटा ई उणरो है।

खाती बोल्यो—हा बावसी तेवटो ई म्हारो है।

ठाकर बोल्या—दख लियो इणनै ! म्हैं कह्यो नी ग्रा सफा कूडचो है। म्हनै ग्रबू भो ग्राव कै थे समभदार ग्रदमिया इणरी बात माथै पतियारा किया कर लियो। इतरो तो थानै ई विचारणो हो कै म्है कन्ता तो घाडो कन्ता, हळवाणी र खीलै री चोरी करनै काई माथो फोडू ला।



सूगी चारणी

बारठजी र पाडोस मे एक सूगो रैवतो। एकर बारठजी मेळ वहीर व्हिया तो सूगै न मसखरी सूफी। सोच्यो नितरोज बाजी ग्रापणी मसखरी करै सो ग्राज मौको ठीक है। कह्यो— बाजीसा मेळै पधारो तो म्हारै वास्तै एक चोखी सीक 'चारणी' लेता पधारजो।

बाजी बोल्यो—भाई 'सूगो' मिळो तो जरूर लेयनै ग्रावू ला।



वेगार

गाम रो ठाकर भाजी सू हरदम वेगार लेवतो। भाजीडो वापडो हैरान व्हैग्यो। पण गाम छोड नै जावणो कठै ? छेवट एक दिन घणो इज दुखी व्हियो तो आतो ग्रायोडो जाय नै कूवै मे पडग्यो।

कूवै मे एक माटो सीक काछवो बैठो हो। वो भाबी नै देख नै वोल्यो—थू ठीक ग्रायो भाया, म्हारी टाग दूखै है, सो थोडो हाथ तो राख।

भाबी मन मे इज बोल्यो—व्हा रे तकदीर ! कुग्र मे पडयो तो ई वेगार ग्रागै त्यार !



भू डी साढ

एकर कोई ठाकर बारठजी नैं एक भू डी साढ मोल मे दीवी। भू डी ई इसी क सफा ठेठर, महीनैं मास री पावणी। बार ठजी सोच्यो आ जबरी हुई!

उणा तुरत एक तरकीब सोची। वैं साढ रैं कनैं गया अर उणरैं मू डैं आगै कान लगाय नैं ऊभा व्हैग्या। ठाकर पूछ्यो बाजी सा यू काई करावो हो?

बारठजी ठाकर न चुप रैंवण रो इसारो करता कह्यो— म्हनैं इणरी बात सुणण दिरावो, आप बीच मे हाका मत करावो। ठाकर बारठजी रैं मू डैं कानी देखण लागा। थोडीक ताळ पछै बारठजी बोल्या—ठाकर सा आपरी आ साढ तो घणी अनुभवी है, इण म्हनैं कह्यो कं—

लका ऊपर धुरता निसाण।
जद होती म्हू तोड तियाण।
बीकानेर बसाई बीक।
जद होती टोळा मे टीकं।
मालाणी म रावळ मालो।
जद चरती म्हू काचो पालो।
थू काई पूछं र चारण जुआ।
कौरव पाडव तो कालं हुआ।

ठाकर देख्यो बारठजी सगळी ठोड बदनाम कर नाखैला। सो भट दूजी चोखी साढ देवण रो हुक्म दियो।



कढी

राजपूना री एक बरात दूजे गाम गई। आधी रात ताई तो दारू री मैफला चालती रही अर ढळती रात मे बरात जीमण न गई। पुरसगारा अर जीमण वाळा सगळाई दारू मे धुत्त व्हियोडा हा।

एक जण परूसता थका मनवार करी लिरावो आ कढी।

जीमण वाळो नसै री झाक मे समझयो कै तरवार बारै कढी। सो थाळी र ठोकर मारनै भचच करता पोतारी तरवार म्यान बारै काढी अर बाल्यो—थाकी कढी तो म्हाकी ई कढी।

कमीण कारुवा बीच मे पडनै ठाकर लोगा न समझाया, नी तो पीळी कढीरी ठौड लाल कढी ढुळ जावती।



सिकायत

थाणे में पुलिस रो एक थाणेदार कोई सिपाही माथ अणूतो नाराज व्हैगयो। वो कड़क नै बोल्यो—दवात कलम लाव म्हू थारी सिकायत लिखूं ला। सिपाही पडूत्तर दियो—सिकायत इज लिखणी है तो पछै आई मेळीज लिख दीजो कै दवात कलम इणरैं कनै मगाया, पण लाय नैं कोनी दिया।



मौसर

एकर एक लोचड़ आदमी कोई मोसर में जीमण न गयो। आवती वखत उणै थोडो सीरो टाबरां खातर लोटै मे भर लियो। मिनखां उण न देख लियो। उणां कह्यो—भला आदमियां इण लखणां सूं तो भूंडा लागसो। काल घरै काम पड़सी जद लोग सगळी कसर निकाळ लेसी।

लीचड़ बोल्यो—भूंडा तो जद लागसा जद मोसर करण री गळती करस्यां। मोसर इज नी करां तो भूंडा किया लागस्यां?



खरो रुपियो

एक सेठ एकर जाट नैं साथै लेय नैं सासरै जावै हो कै मारग मे रात पडगी। सेठ मारग सू आगो एक बाटकै ओळै जाय नै सूतो अर जाट मारग रै सै बीच खूटो ताण नैं सूतो। आधीक रात रा उण मारग सू चोर निकळचा। जाट नै मारग रै सै बीच सूतो देख नै उणा खोपडी मे एक जूत जरकायो। जाट रै पोतियै मे मजूरी रो एक रोकड रुपियो बध्यो हो, सो जूत जमावता ई टप्प करतो बाज्यो। चोर रुपियो खोल नैं देखण लागो कै जाट बोल्यो—देखो काई हो, रुपियो खरो है, खोटो कोनी है अर जे वहम हुवै तो सेठा नैं पूछलो—वै बाटकै रै ओळै सूता।



गोली लागी

एकर एक सेठ ऊंठ माथै कोई दूजै गाम जावै हो। मारग मे बदूक लियां धाड़वी मिलग्या। ऊंठ वाळै वानै देखतां ई ऊंठ ढाण कर लियो। धाड़वियां देख्यो कै हाथ मे प्रायोड़ो सिकार जावै, सो उणां लारो कियो—धड़ाम करतो एक फायर कियो। धड़ाको सुणतां ई सेठां रो काळजो फड़का चढग्यो। पेट मे गोळ जगां छोड़ दी अर पागड़ियां बिखर न गळै मे आयगी। पण सेठां गाळो ऊंठ अणूतो सातरो हो सो धाड़वी उण नै पूग कानी सक्या।

कोस दो कोस आगै निकळ्यां पछै सेठ गळगळै कंठ सूं धीरै सीक पूछ्यो—भाया गोळी किणर ऊंठ रै लागी ?

ऊंठ वाळो बोल्यो—ना !

—तो किणरै थार लागी ?

ऊंठ वाळो फेरू बोल्यो—ना !

अरे बापरे ! तो पछै गोळी म्हारै इज लागी हुसी—सेठ एकदम डूकियां अर हब्बद करतां धरती माथै आवतां वाज्या।



भल कूदिया

एकर सियाळै मे एक भाबी पोतारै सासरै गयो। सासरै मे उणनै उमर मे पैंली वार बडा खावण नै मिळया। भाबी नै बड़ा घणा स्वाद लागा। मन मे विचार कियो, घरा जाय नै इमा रा इसा बडा भावण कनै बणाय नै खावूला। वो आवतो वगत मारग मे ठेट ताई बडा !— बडा ! घोखतो आयो। इसी नी व्है कठई क ठेट गया नाम भूल जावै। उण मारग मे एक ठौड हिरण कूदता दीठा तो बडा रो नाम भूलग्यो अर भल कूदिया नाम पकड लियो। अबे भल कूदिया ! भल कूदिया !—रटतो रटतो घरा पूगो। जावता ई भावण नै हुकम दियो कै थारी मा वणाया जिसा भल कूदिया बणाव ! भावण बापडी बोली कै भल कूदिया होवै काई है ? म्हे तो नाम ई आज सुण्यो है।

इण वात माथै दोन्या रै आपस मे तकरार व्हैगी। भावण रीस मे की ऊंधो पाधरो बोली। भावीडै मार मार नै फूस काढ दियो। रोवणो-पीटणो सुण नै पाडोसरी लुगाया आई अर भाबी नै लडण लागी—ठाला-भूला कसाई, थनै दया नी आई रे ! यू लुगाई नै मारीज ? देख वापडी रा होठ सूज सूज नै बडा व्है ज्यू व्है ग्या है। भावी सुणता इज बोल्यो—अरे हा, अबै याद आयो—बडा बणाव राड बडा भल कूदिया नी बडा। भावण रोवती रोवती बोली—नास जाईओ रे दुस्टो थारो, पैंलीज म्हनै यू रोयो व्हैतो।



बाबो अर भगत

सियाळे रै दिना मे एक बाबोजी कोई भगत रै घर मरोर माथै राखोडो लगाय नै धूणी आगै अकडघाडा बैठा हा। भगत पूछ्यो—महाराज आपर ओढण नै काई लाऊ ? बाबोजी बोल्या—नही रे बच्चा, हम फक्कडो के लिए ओढने बिछाने की क्या जरूरत है ? हम तो ऐसे ही रात निकाळ देंगे।

भगत जाय नै सोयग्यो। अर ज्यू ज्यू रात ढरण लागी, बाबाजी री जाडी बाजण लागी। बावै देख्यो यू तो कोकडी जाम आय जावैला। अठी-उठी निजर नाखी तो लुगाया रा घाघरा सूकता निजर आया। बावजी विचार कियो रातरा कुण देखै है, अर प्रभात म बेगा उठ जावाला। सो बाबोजी घाघरा ओढ नै आराम सू पोढग्या।

दिनू ग भगत बा नै जगाय नै पूछ्यो क बाबाजी यू किया ?

बाबो बात नै सुधारता बोल्या—बच्चा हमारे फक्कडा के क्या है ? हम तो बाघम्बर ओढते हैं और मोका पडे घाघवर भी ओढ लेते है। हमारे सब चलता है।



डाक्टर रो काम

एक ग्वाळो कोई डाक्टर री गाय चारतो। डाक्टर उणरै काम सू घणो राजी हो। उण एक दिन राजी होयनै कह्यो—म्हारै लायक काम काज होवै तो म्हनै भळाइजै भाया। ग्वाळो हाथ जोड नै बोल्यो—भगवान आपरो काम नी पाडै तो आछो।



बोलो ठीकरो

एक बोळो आदमी बजार सू साग भाजी लेय नै आव हो कै मारग मे कोई साथी मिळग्यो। पूछ्यो—आणद मे हो ? बोळो बोल्यो—बैंगण लायो हू। साथी पूछ्यो—बाळ बच्चा तो मजै मे है ? बोळै पड़ुत्तर दियो—भुरतो बणायनै खाऊला।



बोली रो फरक

एकर एक मुसलमान मरग्यो। लोगा उणनै लिजाय नै जमी मे दफणाय दियो। रात पड्या उठै एक जरख आई। वा कबरा खोदण रै हेवा व्हियोडी ही सो उणै कबर नै खोद नाखी अर लास नै ठिरड नै वारै लेयगी।

दिनूगै एक जाट अर एक मुसलमान उठीनै निपटण खातर गया। कबर खुदयोडी देख नै दो यू जणा बहस करण लागा। मुसलमान रो कवणो हो कै रात रा खुदा रै उठै सू फरिस्ता आया अर मुडदै नै वहिस्त मे लेग्या। जाट कैवतो हो कै कोई फरिस्ता न कोई वरिस्ता, ए सुभट पग मडयोडा जरख रा। रात नै जरख आई है सो लास नै ठिरड नै जगळ मे लेयगी है।

इण भात दो या रै आपसरी मे तक्रार होवण लागी। इतरैक तो एक समझदार आदमी उठीनै सू निकळयो। उण दो-या री वात सुण र टटा तुडावण खातर हसता थका कहयो — वात थारी दो-या जणा री साची है, पण फगत बोली रो फरक है। दूजो की वात कोनी।

> बोली - बोली आतरो
> नै बोली - बोली फरक
> थाकै कैवै फरिस्तो
> याकै कैवै जरक



कतारिया

ऊठा री कतार चालती चालती एक गाम रै गूदरै पूगी कै दिन मेर बैठग्यो। कतारिया गाम र आकरियै ढाळो कियो। एक जणो साग मे छमकै खातर तेल लावण नै गाम कानी वहीर व्हियो अर दूजोड़ा ठीया जमाय नै आटो गूदण लागा। तेल लावण खातर कोई बरतन वासण नी हो सो उण अठी उठी देख्यो। कनै इज मामाजी र थान माथै एक माटी रो धूपियो निगै आयो। सू याड देख'र उण झट उठाय लियो। पछै बाणियै री दूकान माथै जायनै दो आना रो तेल माग्यो। बाण्यो तेल तोलनै घालण लागो तो धूपियो एक कानी सू छळोछळ भरीजग्यो अर इण उप रात ई थोडो तेल लारै बचग्यो। बाणियो बोल्यो—बोल भाई औ तेल कैण मे घालू ? कतारियै धूपियो झट ऊधो करता कह्यो— लै अठीनै घाल दै भाया!

बाणियै हसतै थकै तेल घाल दियो। पाछो ढाळ माथै पूगा उण रा साथीड़ा उणरो माजनो पाड़वा लागा कै दो आना मे इतोसीक तेल काई लायो रे नाजोगा!

वो ताती होय नै बोल्यो—म्हू इतरा गेलो कोनी हू। औ तो लारै बच्योड़ो तेल है। बाकी औ दखो अठीनै छळाछळ भर्योडो है। यू कैवता उण फेरू धूपियो ऊधो कर दियो।



गाऊ दान

पंडितजी नै जरूरत ही एक गाय री। गाय ई इसी कै जिका दूजड़ी व्है अर दूधाळ ई व्है। इणरै अलावा सफा फोगट मे मिळै। वे सोच विचार नै एक जजमान रै घरा पूगा। थोड़ा क दिना पै'लो इण मालदार डोकरै, चौधरी रो मरतग व्हियोड़ो हो अर डोकरी पूर्ण वैठी ही। डोकरी रो बेटो गामतरै गयोड़ो हो।

डोकरी सुभाव री की भोळी ही सो पंडितजी पोतारो नवमो जमायो। उणा कह्यो—म्हनै रात रा सुपनै मे डोकरो मिळ्या, सो वै दूध घी नी मिळवा सू घणा दुखी है। बात सुणनै डोकरी चिंता करण लागी। पंडितजी उणनै गऊ दान रो रास्तो बतायो। जिणसू दूध घी डोकरै नै मतई पूग जावला। इण भांत पंडितजी एक सागोराग गाय फोगट मे कबाडली।

घर आया डोकरी रै बेटै बात सुणी तो उणनै पंडितजी माथै रीस आई। उणै ई सोच विचार नै एक दिन गाम मे अमल री हाकी कराया। सगळो गाम आयो। पंडितजी ई वठा। वो अमल री मरदिया भरनै पंडितजी कनै गयो अर हाथ जोडनै अरज करण लागो—सगळा गाम जाणै अर आप ई जाणो कै

म्हारो बाप अमल रो पक्को बधाणी हो। अमल उगा पछै वै दूध पीवता विना अमल उगा तो दूध बारै की काम रो कोनी। सो जिण भात आप वानै दूध पुगावण रो प्रबंध कियो है, किरपा करनै उणीज भात अमल पुगावण रो प्रबंध ई करावो। इण वास्तै आपनै हाथ जोडन अरज है कै इतरो अमल आपनै रोज लेवणो पडैला। पंडितजी उठ नै रवानै व्हैग्या। दूजै दिन रात थका गाय पाछी चौधरी रै वाड वळगी।



पावली कुण लेसी ?

पाच सात बरस रै टाबर रमता-रमता पावली गिटली। मा बाप नै घणी चिंता हुई। वै उणनै डाक्टर कनै लेग्या। टाबर री मा टाबर न समझायो—देख बेटा डाक्टर वैद ज्यू करजै अर सीधो बैठो रहीजै। म्हू थनै विस्कुट दू ला।

टाबर बोल्यो—मा विस्कुट तो भला ई दीजै पण म्हनै आ बात बता कै पावली बारै निकळैला वा डाक्टर लेवैला कै म्हनै देवैला ? मा बोली—थनै देवैला बेटा थनै। थू चुपचाप सीधो बैठो रहीजै।



एक्सीडेंट

एक आदमी वजर ठोठ हो । काळो आखर उण रै वास्त भैंस बरोबर हो । पण माटो हर वखत बूटेड सूटेड अपटूडेट रैंवतो । वो रेलगाडी मे अठी उठी जावतो जद अगरेजी रो अखबार हरदम कनै राखतो । एकर वो अखबार लिया गाडी मे बैठो हो कै कोई भण्यो गुण्यो आदमी आय र उण रै कनै बठग्यो । उणै पूछयो—काई सा आज अखबार मे ताजी खबर काई है ? अखबार पडा रै ऊधो पकडयोडो हो अर पे'लै पेज माथै इज कोई मोटर कार रो एडवरटाईजमेंट हो, जिको ऊधो दिखतो हो । उण न देख'र आप बोल्या—दूजी तो की खास खबर कोनी पण आज एक मोटर एक्सीडेंट होवण सू उलटगी है ।



कालो मन

एक गाम मे एक अलाम आदमी रैवतो । गाम मे टटा-झगडा करणा, करावणा, मुकद्दमाबाजो करणी अर दूजा नै खोटो सलाह देवणी उण रा रोज रा धधा हा । एक दिन उणं दरपण मे चे'रो देखता पोतारै साथी नै कह्यो—यार म्हारा तो मोकळा बाळ सफेद व्हैग्या । साथी बोल्यो– कोई फिकर जिसी बात कोनी । बाळ सफेद व्हिया तो काई व्हियो । थारो मन तो हाल काळो किट्ट है, तामणी तू डै जिसो ।



थारै जिसो म्हूँ ई हूँ

कोई कालेज रा प्रिंसिपल एक होटल मे की खावण पीवण नै गया । कुरसी माथै आराम सू बैठ्या पछै होटल रो मीनू पढण वास्तै जेबा मे चस्मो टटोळण लागा तो नदारद हो । उणा बेरै नै बुलाय नै कह्यो—भाया थोडो थू इज पढ नै सुणाय दीजै—काई-काई चीजा है, अर काई भाव है ?

बेरो थोडो मुळक नै बोल्यो—म्हू काई पढू सा'ब ! आपर ज्यू म्हारै वास्तै ई काळो आखर भैंस बरोबर है । पढ्योडो व्हैतो तो अठै ऐंठवाडो क्यू माजतो ?



डरपोक ड्राईवर

बस में बैठी एक लुगाई ड्राईवर नें कह्यो—अजी सुणो, बस थाडी रोक दीजो एक डोकरी लार रैयगी है।

ड्राईवर झट बस नें रोक दी।

लोग बोल्या– वाह भाई वाह ! ड्राईवर बडो भलो आदमी है। नी तो एक लुगाई रैं कैवण सूं एक डोकरी खातर बस कुण रोकैं ?

लारली सीट माथैं बैठ्या एक आदमी हसण लागो। वो बोल्यो—ड्राईवर भलो है कैं कोनी ओ तो ठा नी पण ओ डरपोक जरूर है। जिण लुगाई उण नैं बस रोकण रो कह्यो वा उणरी पोतारी ओरत है। बापडो बस नी रोकतो तो घरैं गया वा उणरी बारैं बजा देवती।



भाडैती

भाड़ रै मकान मे रैवण वाळै भाडैती मोकळै महीना ताई भाडो कोनी दियो। मकान मालिक हैरान व्हैग्यो। एक दिन वो बोल्यो—भाडै वास्तै म्हारै सू नित रोज आटा नी देगीजै। म्हू था सू काठो धापग्यो हू। अबै म्हू तीन दिन री मोहलत देवू। कोई तीन दिन तै करलो। इण रै पछै भाडो हर हालत मे जमा करावणो पड़ैला।

भाड़ती ऊन्चो माथो करनै बोल्यो—ठीक है, होळी, दीवाळी अर आखातीज ए तीन दिन म्हारै कानी सू तै है। इणरै पछै भाडो जमा कराय दू ला।



कालस रो डर

पाच बरस रो पप्पू सफेद झक्क कपडा पैरया पोतारैं दादै कन ऊभो हो। इतरैंक तो एक काळो कुत्तो उणरैं कनै होय नै निकळयो। पप्पू दादैजो रैं पगा मे लिपटग्यो।

दादोजी बोल्या—फिट रे नादार! काळियै कुत्तै सू ई डरग्यो!

पप्पू कैवण लागो—ना दादोसा! म्हू डरयो कोनी। काळियो म्हारै कपडा मे काळम लगाय देवतो। इण वास्तै म्हू आगो सरकग्यो। काले मइया रा तव सू म्हारो कुरतो काळो व्हैग्यो हो। दादोजी हसण लागा।



चाटौकड़ो नौकर

एक सेठ रै अठै एक नौकर रैवतो। वो बडो चाटौकडो हो। मौको मिळता ई अठो उठी देखनै हरेक चीज चट कर जावतो।

एक दिन वो कोई काम सू रसोडै मे पूगो तो थाळी मिठाई सू भरयोडी पडी ही। ताको साझ नै वो गपागप अरोगण लागो। इतरैक तो घर-धणियाणो आय पूगी। उणनै दूजा घालतो देखर वा कैवण लागी—रामपाळया म्हू अबै थासू हैरान व्हैगी हू। थनै आ आदत अबै छोडणी पड़ला। नौकर बोल्यो—माजी म्हू ई आप सू हैरान व्हैग्यो हू। आप ऐन मौकै किया आय जावो। आपनै ई आ आदत छोडणी पडैला।



मगतै री चतुराई

एक मगतो मरीर मे रातो मातो करारो घोर व्हियोडो हो। उणनै एक दिन भीख मागण सू घिरणा व्हैगी। वो पुलिस मे भरती होवण खातर दफ्तर म पूगा। माप तोल, लबाई अर मरीर री बणगट बिगरै सगळी बाता म वो फिट व्हैग्यो। छेवट उणरो जबानी बातचीत मे इटरव्यू व्हियो अर उणनै एक सवाल पूछ्यो—जे कठई भीड व्है जाव तो उणनै बिखेरण खातर थू काई उपाव करेला ?

मगतो तुरत बोल्यो—म्हू चदो लिखावणो सरू कर दू ला। भीड मत ई छट जावैला।



अस्तर अर सस्तर

मास्टर जी क्लास मे पढावता हा। अस्तर सस्तर रो प्रसग आयो। वै टाबरा नै समझावण लागा—जिको आगै सू फैंकनै मारीजै वो अस्तर बाजै—ज्यू कै तोप, बदूक, तीर। अर जिको हाथ सू पकड नै मारीजै वै सस्तर बाजै—ज्यू कै छुरी, तलवार, कटार।

क्लास मे मास्टरजी रो पोतारो छोरो ई बैठो हो। उणरै दिनू गै इज जूत उडचा हा। वो माथै म खाज खिणतो बोल्यो—पिताजी, जूत किण मे गिणीजै? ओ अस्तर है कै सस्तर? मास्टर जी ठीमर सुर मे बोल्या—ओ अस्तर नै सस्तर दोयू है बेटा।!



भाणियो नै वाणियो

एक सुनार-परिवार मे दो भाई हा। पूरा खामची ग्रर काम रा करणिया। पूरै चोखळै रा मिनख वारै कनै गहणा घडावता। वारै एकाएक भाणजो हो। एकर उणनै कोई उमदा गैहणो घडावण री जरूरत पडी। वो पोतै इतरो कारीगर कोनी हो सो पोतारै मामा कनै पूगो।

गैहणो घडती वखत मोटोड मामै रो जीव झलियो कोनी सो वो खोट भेळण लागो। नैनकियै भाई नै आ बात आछी लागी। इतरो काई खूटोडापणो ? खोट चालण वास्तै दुनिया मोकळी पडी है। कम सू कम भाणेज नै तो छोडणो चाहिज। एक घर तो डाकण ई टाळै।

भाणेज कनै इज वठो हो, सो छोटोडै मामै काम करता-करता मोटोडै न इसारो कियो। वो टप टप करतो बोल्यो— भाणियो है रे भाई भाणियो है।—भाणियो है रे भाई भाणियो है।

पण मोटो मामो कुलालची हो। पूरो लोभ मे डूबोडो। वो छोटोड रै इसारै नै समझग्या। उण ई पाछो इसारै मे इज

जवाब दियो । वोई टप-टप करतो बोल्यो—भाणियो न वाणियो बरोबर है रे भाई बरोबर है !

ननकियै मामै री माठ भालली । वो मन मे समझ्यो कै इण माथ कवण वावण रो की असर नी पड़ । ओ करै ज्यू करण दो ।



सगलाई भाठा

एक ठाकर नै किणेई पूछ्यो कै ठाकरा आपरै टाबर कितरा ?

ठाकर बोल्या—पाच कु वर नै एक बाई ।

—टाबरा रा नाम काई है ठाकरा ?

ठाकर वडै ठसकै सागै बोल्या—मोटोडो गिरवरसिंह, दूजो पहाड़सिंह, तीजो परवतसिंह, चोथो डू गरसिंह, पाचमो भाखरसिंह अर बाई रो नाम सिला बाई ।

सगळा रा ई नाम सुण नै आदमी हस्यो अर बोल्यो—आछा ई भाठा जनम्या !



माकूल जवाब

सेठ रो नौकर नाई कनै बाल कटावण नै बैठो इज हो क सेठजी ग्राय पूगा। नौकर नै बाल कटावतो देख नै सेठ न रीस ग्राई। उणा कह्यो—आ थारी आदत ग्रगा ई खोटी है। काम री वखत थू कोई नै कोई अडगो लेय नै बैठ जावै। ग्रब ऐन काम री वखत है ग्रर थू बाल कटावण नै बठग्यो है। म्हनै थारा ग्रा ग्रादत बिल्कुल पसद नी है।

नौकर नीची धूण घाल्या बोल्यो—सेठ सा'ब ग्राप ई थोडो विचार तो करो—म्हारा ऐ बाल उग्या ई काम करती वखत है तो पछ काम री वखत कटावण नै बठू तो इण मे अजोगी बात काई है ? काम करता करता बाल नी वधना हुव तो बात दूजी है। ग्राप तो सफा यू इज राता पीळा व्हो।



नटस्यू तो म्हूँ नटस्यूं

भिक्षा खातर एक बाबेजो एक घर आगे जायनें अलख जगाई—अलख निरंजन ! भगवान भला करे तुम्हारा !

घर मे बीनणी एकली बैठी ही । उणरी सासू कठैई बारै गयोडी ही । इण वास्तै उण बाबाजी नें भिक्षा रो ना दे दियो अर खालो हाथ पाछा भेज दिया । बाबाजी चुपचाप पाछा जावता हज हा कै जितरै सासू आयगी । साधु नै घर सू खालो हाथ जावतो देख उणनैं घणी रीस आई । वा बोली—मू डो भू डो बापडी इण भडूरी रो जिको थानै भिक्षा देवता ई नटगी । बाबाजी थे चालो म्हारै साथै पाछा ।

बाबोजी मन मे घणा राजी व्हिया । वै आसीस देवता बोल्या—बाई भगवान भला करे तुम्हारा !

घरा जायनें सासु बीनणी कानी आख्या काढती बोली—म्हारै बैठ्या आ नटण वाळी कुण ? म्हनें मूवाडी समझली काई ? इण घर मे जीवू जितरै नटस्यू तो म्हू नटस्यू ! जाओ बाबाजी कोनी मिळै भिक्षा थानै ।

बाबोजी बडबडाट करता आया ज्यू पाछा रवानें व्हैग्या । काई जोर करता !



पण म्हूँ किया नट्टूं ?

बावोजी दूजै घर पूगा तो उठैई मा पोतारै बेटै मार्थ रीसां बळ नै उणन गाळां काढ ही। बाबाजी नै देखनां ई या बिहरी—मातो मतवाळो मुस्टंड जिहयोडो भीख मागता रोवतो फिरै, सरम कोनी आव ? कमा नै क्यू नी खाव ?

तेरी भीख तेरै घर म रख पण साधु यू झट हट काए क्यू बोलती है बाई ! ले हम तेरे दुआर से भी खाली हाथ चले जाते हैं।

बावै री बात सुण नै लुगाई री रीस थोडी बुझगी। या बोली—बाबाजी ! भो छोरो घणो बोधरडो है, इण रै एक थप्पड तो लगावो नी।

बावो रीस मे भुटभोडो तो हो इज। भर छोरो पण लै' मे इज ऊभो हो सो भा वळकाई ढील हाथ री छोर र कनपडा म सो थट्ट करतो छारो तो ऊधो।

लुगाई बूकी—थारो नास जाईजो रे भगडा, म्हारै छोर न मार नाख्यो !

बावा बोल्यो—थू तो एक मुट्ठी दाणा खातर ई नटगी पण म्हू थारै जिसो कोनी हू सो एक थप्पड खातर नट आऊ। थारै कैवता पाण मन तो थप्पड देवणी ज पडी।



चमारी वालो चूडो

एक सोकीन चमारी नैं चूडो पै'रण रो घणो सोक हो। सो पेट रै आटा दे दे नैं उणं पैसा भेळा करधा अर छेवट खवा खाच चूडो प'र लियो।

चमारा री ममा ही के लुगाया उणरै चूडं नैं देखै उणरी मगावणा करै अर उणनं थुथको नाखै। इण वास्तै वा चूडो पै'र नै पूरे वास मे फिरी पण उणनं किणे ई नी वतळाई। पाणी री विण घट माथै ई उण हाथ ऊचा किया, नीचा किया, निराई मटरका किया, पालर पाणो मे घोवती वखत चूडं नैं पाच सात वार खळ खळ करता बजायो, पण मजाल है, किणे ई आडी मीट सू ई उण कानी नी देख्यो।

चमारी चितबगी व्हैगी। घरं आया उणे पोतारै झूपै नैं लापो चेप दियो अर पछै आगी आय र हाथ ऊचा करनै कूकण लागी अरे दौडो रे, दोडो रे म्हारो घर बळ रे। फगत आ हाथा मायलो चूडो बच्यो है, बाकी सगळो ई बळग्यो रे।

हाको सुण'र उण री पाडोसण आई अर उणरो चूडो देख नैं थुथको नाखती बोली—चूडो तो थें जबरो परयो पण आ लाय कीकर लागगी ?

चमारी आसूडा छळकावती बोली—इतरी जेज थू कठै मरी ही ? थाडी पै'ली आय जावती तो लाय क्यू लागती।



मादो - ऊंट

एकर एक ऊंट बिमार पड्यो। गळे मे गूबड उपड्यो। नी तो वी चर अर नी पीव। ऊंटवाळ नैं घणी चिंता लागी। वा कनल सहर मे एक हकीमजी बन पूगा अर वानैं बुलाय लायो। हकीमजी अनुभवी आदमी हा। उणा ऊंट रै गळे मे उपड्योड़े गूबड नैं आछी तरियां देख्यो भाळ्यो अर बिमारी न समझाया।

इणरै पछ ऊंट नैं सागडो जए पकड़ाय न हकीमजी एक जोर री मुक्की ठरकायो उण गूबड माथै हब्बीढ करतोडो। ऊंट रै गळे मे तसतू बो फस्योडो हो सो वो सिरक नैं पट मे उतरग्यो। ऊंटवाळ कनै इज ऊभो हो। उण गैरयो ओ इलाज तो बडो जबरो है। एक मुक्कै म इज ऊंट ठीक व्हैग्यो अर चरण-पीवण लाग-ग्यो। मोको आया आपाई इणनैं अजमाय सका।

थोडा'क दिना पछ ऊंटवाळ री मा बिमार पडै। सजोग सूं डारी रै गळे मे ई गूबड उपड्यो। डोकरी रो बेटो पक्को हकीम बण्योडो हो। उण इलाज सरु कियो। डोकरी न धरती माथ सूवाण नैं काठी पकडली अर पछै एक जमायो जोर री मुक्की उणरै गळे माथै, सो बापडी डोकरी तो पै'ली चोट मे इज परलोक सिधायगी। इणरै पछ बेट ई हकीमी करणी छोडदी।



कसाई अर बकरो

एक टाबर आपरै बाप सागै सडक रै कनै ऊभो हो कै इतरै तो दो च्यारेक कसाई एक बकरै नै लेयनै उठी सूं निकळया। बकरो रोवाड करतो जावै हो अर कसाई उणर कावडिया वळकावै हा।

टाबर स्रो खिलको देख'र पोतार बाप नै पूछयो—बापू, ऐ कुण है, अर बकरै नै कठै लिजावै है ?

बाप कहयो—बेटा, ऐ कसाई है अर बकरै नै कसाई-खानै म लिजावै है।

टाबर बोल्यो—बापू, म्हैं तो जाण्यो ऐ इणनै स्कूल लिजावै है।



सुरग नरक रो झगड़ो

एकर सुरगवासिया अर नरकवासिया रै आपसरी मे झोड व्हैग्यो। वात यू हुई कै सुरग नरक कनै कनै इज वस्योडा हा। आडी फगत एक भीत ही। सुरग कानली जमीन थोडी ऊचात मे ही अर नरक कानली की नीचात मे। सुरग रै पाणी रो निकास नरक रै मायनै सू हो। सुरग मे सगळाई नेमी धरमी मिनख हा सो रोज स्नान-सपाडो करता। इण कारण नरक मे कादो कीचड व्है जातो। एक दो वेळा नरक वाळा कह्यो ई खरा, पण सुरग वाळा कान गिनारो कर दियो।

एक दिन नरक वाळा नै रीस आई। उणा सगळा ई भेळा होयन विचार कियो कै अबै किया ई करनै ओ पाणी रो निकाम तो बद करावणो इज पड़ला।

छेवट उणा सुरग वासिया कनै ओळभो भेज्यो। सुरग वासिया ई इण बात मार्थ पूरो विचार करनै पडुत्तर दियो कै पाणी रो निकाम तो परपरा सू है सो है, उठ इज रेवला। उणा नै जे एतराज हुवै तो वै कानूनी कारवाई कर सकै है।

नरक वाळा पाछो जवाब दियो कै मान जाग्रो ग्रर आपसरी मे निवेडलो । कानूनी कारवाई मे थे म्हासू जीत नी सकोला । कारण कै जितरा वकील ग्रर जज है, वें सगळा म्हारै ग्रठीनै बैठा है ।

ऐ समाचार सुरग मे पूगा तो सुरगवासी पाछो विचार करण लागा ।



लखपति रो वारिसदार

एकर एक लखपति ग्रादमी मरग्यो । वो एकलपड इज हो । उणरै मागै लारै कोई रोवण वाळो ई कोनी हो ।

पण उण री गळी मे रैवण वाळै एक ग्रादमी उणरै मरतग रा समाचार सुण्या तो वो भू डै ढाळै रोवण लागो ।

लोगा कह्यो—रे लखतपि थारै काई लाग हो ? थू इतरो क्यू रोवै है ? रोवण वाळै रोवतै रोवतै इज पड्ुतर दियो—वो म्हारै की लागै कोनी हो, इण वास्तै इज तो म्है रोवू हू ।



लिख्या करम मे मोठ

मामै रो गाम नीएड काठै आयाडो हो अर भाणेज रैवतो थळी मे। भाणेज रै उठै कोरा मोठ पाकता सो भाणेज मोठ खाय खाय नै ओक्ळीजगो हो। वो घणै बरसा सू नानाणै गयो कोनी हो सो मतो कियो कै च्यार दिन मामै सू मिळ नै आवा, गेहुवा रा फाफरा खाय नै आवा।

माम र उठ गेहू तो हर बरस पाकता, पण मोठ सम सार करैईश्ण पाकता। इण वास्तै वै टाप रूपी मोठा री रोटया बणाय नै खावता। उण बरस उठै मोठ पाका हा सो भाणेज री मू धाई करण खातर मोठ री रोटी बणाय नै आगै मे परूसी। भाणज माथ री धूण देवतो मन मे इज कवण लागा—

की करणी की करमगत, की भावी मे खोट
गेहू न उमग्यो फिरघा, लिख्या करम मे मोठ



तेली रो बलद

वकील सा'ब रै पाडोस मे एक तेली रैंवतो। तेली दिन उगताई घाणी जोत देवतो। आखै दिन घाणी चलायबो करतो अर पोतारै धधै मे मस्त रैंवतो। अठी उठी फिरणनै कै फालतू बैठो रैंवणनै उणनै वखत ई कोनी मिळतो।

एक दिन दिनूगै इज वो बारै आयनै चौकी माथै बैठग्यो। वकील सा'ब उणनै देख्यो तो पूछ्यो—काई रे आज काम री वखत चौकी माथै आय नै किया बैठग्यो ? तेली बोल्यो—यू इज बठो हू सा !

वकील—क्यू आज घाणी जोती कोनी काई ?

तेली—घाणी तो जोत दी सा ! घाणी तो मायनै बराबर चालै है।

वकील—थनै किया ठा पडै कै मायनै घाणी बराबर चालै है ?

तेली—क्यू सा म्हू बोळो तो हू कोनी। वा देखो घाणी मे जुत्योडै बळद रै गळै री टोकरी बराबर वाजै है। जिण सू सुभट ठा पडै कै बळद फिरै है अर घाणी चालू है।

वकील—ओ कोई जरूरी थोडो इज है कै बळद चालै जद इज टोकरी वाजै। वो एक ठायं ऊभो ऊभो माथो हिलाय नै ई टोकरी बजाय सकै है।

तेली—बात तो आपरी साची व्है सकै है, पण म्हारो बळद सफा ठोट है। वो एल एल० बी० करयोडो कोनी। इण वास्तै उणरै दिमाग मे ओ फितूर नी आय सकै।



मिनख आडो फिरग्यो

दो मिनकिया दिनूगै आवसरी मे मिळी तो वतळ करण लागी—

—बाई ए बाई आज यूं अणमणी किया? मारग मे कोई कुत्तो मिळग्यो काई?

दूजोडी मिनकी बोली—ना ए बैन, कुत्तो तो कोनी मिळयो, पण दिनूगै इज एक मिनख आडो फिरग्यो।



अदाता रो हब्बीडो

जोधपुर महाराजा मानसिंह जी री चाकरी मे रासोजी नाम रा एक चारण रैवता। बडा मसखरा अर बडा हाजर जवाब। इण वास्तै महाराजा वानै हरदम पोतारै कनै राखता। दो'यू रा मन मिळघोडा होवण सू वारै मूडा रो लोही मूग्रोडो हो। रासौजी महाराजा री जचै ज्यू ई मसखरी कर लेवता पण महाराजा अगाई आगी नी लेवता। वै उणनै फगत मनोरजन मानता।

एक दिन महाराजा अर रासौजी दो'यू जणा जोधपुर रै किलै माथै बैठा हा। वै जिण ठौड बैठा हा, उण रै नीचै किलै री भीत सफा ऊभी सपाट ही। इण वास्तै ऊपर सू भरम खाड निजर आवती ही।

महाराजा मानसिंहजी नै बैठा बैठा नै काई जची सो बोल्या – रासौजी जे थे अठै सू कूद जाओ तो हब्बीडो तो बडो जोर को बाजै !

रासैजी गुद्दी मे खाज खिणता खिणता तुरत जवाब दियो- अदाता, म्हा सरीखै गरीब आदमी रो काई हब्बीडो बाजै ? म्हारो हब्बीडो का तो म्हारै घरै, चारणवाडै, बाजै अर का म्हारै सासरै ! पण अदाता जे ठोकीजता व्हो तो नवकूटी मारवाड मे हब्बीडो बाजै हब्बद करतोडो।



दाल मे चूंबाकी

एकर रासौजी कोई काम सू मारवाड रै एक मोट ठिकाणै मे गया। ओ ठिकाणो पोतारी कजूसी रै कारण प्रसिद्ध व्हियोडो हो। रासौजी दरबार रा मानीता चारण हा सो वानै पक्की उम्मेद ही कै वारी आगता सागता ठीक इज व्हैला। पण ठेट गया बात ऊधी पडी। भोजन रो वखत व्हियो, रासौजी जीमण नै बैठा। थाळ आयो पण चालू रसोडै सू। दो च्यारेक लूखा अर काचा पाका रोट, एक मोटै कटोरै मे पाणी व्है जिसी दाळ अर थोडो सीक लूण। देखनै रासौजी गतागम मे पजग्या। इसो भूत भोजन तो कदै ई उमर मे ई नी कियो अर उठीनै पेट म धूकरिया बोलै।

ठाकर कनै इज बैठा हा। रासौजी नै एक तरकीब सूझी। व झट उठ्या साफो उतारयो, कुरतो उतारयो अर धोती रा खोळा ऊंचा खोवण लागा।

ठाकर नै बात की समझ मे नी आई। वै आख्या फाड'र रासौजी कानी देखता बोल्या—कविराजा यू काई करावो हो? रासैजी पडुत्तर दियो—ठाकरा म्हू आपरी इण दाळ मे चू बाकी लगावू ला अर ठेट तळियै ताई जायनै देखू ला कै मायनै कोई दाणो है कै नी। इण वास्तै इज म्हनै कपडा उतारणा पड्या है।

ठाकर पोतारी गळती समझग्या अर रासौजी खातर झट दूजो थाळ मगवाय लियो।



महाराजा री हसी

एकर महाराजा मानसिंहजी मित्र मडळी मे बैठा रग-रळिया करै हा कै बात बात मे आ बात निकळी कै जे कोई वानै महल रा बीस पगोथिया चढै जितरै हसाय दै तो वै उणनै दस हजार री रेख चाकरी रो एक गाम बगसीस म देवण नै त्यार है।

मान जिसा महाराजा नै हसावणो अर कोई बीस पगोथिया चढै जितरी जेज मे! किण री हिम्मत पडती? सगळाई एक दूजै रै मू डै कानी देखण लागा। छेवट रासैजी बीडो उठायो।

रासोजी सू ईसको रावण वाळा मन मे खुसी मनाई कै आज चारण देवता नै हार खावणी पडैला।

सभा जुडी अर महाराजा पगोथिया चढण लागा। [illegible] हसी मजाक री झडी लगायदी। मोकळी कोसिस [illegible] सीधी बीसा वाता बणाई पण महाराजा तो, [illegible] ई रोनी! रासोजी हैरान व्हैग्या अर पगोथिया [illegible] बाकी रहया।

छेवट रासोजी मू डै ढाळे रोव [illegible] टेली—अरे म्हारा करम फूटग्या रे! [illegible] गाम खातर मू डो भीच्या जावे रे! [illegible]

आ राग सुणनै महाराजा [illegible] रोय नै ई गाम पचाड लियो।

ओपती वखसीस

मारवाड़ रो एक मोटो ठिकाणो पोतारी कजूमी रै कारण सगळी ठौड़ चावो व्हियोड़ो हो। एक दिन महाराजा मानसिंह जी रासौजी नै कह्यो कै थे उण ठिकाणं सू कोई बखसीस लेय नै आय जावो तो जाणू कै थे असली चारण हो।

रासौजी बोल्या—अदाता बडो काम तो भगवान नै छाजै, पण आप आ बात फरमाय दी तो अबै आपनै उण ठिकाणै सू बखसीस लाय ने बतावू ला।

रासौजी उण ठिकाणै मे पूगा। दरबार रा चारण हा, इण वास्तै उठै रह्या जितरै दिन तो आगता-सागता चोखी'ज हुई पण रवानै व्हैती वखत सीख मे जिको घोडो मिळ्यो वा दसै जिसो हो। सफा भूडो टेटर, कातर निकळयोडी, मोरा माथै टाकिया पडयोडी, अडकोस वध्योडा अर सास आरवा मे आयोडी। जाणै आज मरै कै काल मरै।

रासौजी की बोल्या नै की चाल्या चुपचाप लेय नै मारगै पड्या। मन मे विचार करण लागा कै आ जबरी सीख मिळी। पण खैर मौका आया देखी जावैला।

थोडाक महीना बीत्या जोधपुर रै किलै मे सभा जुडी। मोटै मोटै ठिकाणा रा सगळाई मिरायत भेळा व्हिया। रासौजी नै वखसीस देवण वाळा ठाकर ई उठै मौजूद हा। रासौजी मौको देख्यो। उगा उण घोडै रै गळै मे घट्टी रा एक मोटो सीक पुडियो

बाग्यो अर उणनै ठिरडघा ठिरडघा ठेट किलै मे लेग्या जठै सभा जुडयोडी ही। रासोजी रो श्रो नाटक देख'र सगळाई चिनगाम रा मोर बणग्या।

महाराजा हसता थका पूछ्यो—रासोजी ओ काई खिलको है ?

रासोजी बोल्या—अदाता नै श्रो खिलको इज निजर श्रायो। श्रा तो म्हनै श्रमुक ठिकाणै री तरफ सू मिळयोडी श्रोपती बखसीस है।

—पण इण गरीब रै गळै मे श्रो भाठो क्यू लटकाय राख्यो है ? मानमिहजी पूछ्यो।

—भाठो तो इण वास्तै लटकायो है हुकम, कै घोडै रै लारलै पगा विचाळै भार घणो है। इण माथै सवारी करा जद श्रो श्रागै सू ऊंचो होय जावै। इण कारण भार बरोबर करण वास्तै श्रा प्रबध करणो पडयो है। रासोजी बोल्या।

बात सुण'र सगळाई हस हस नै लोट पोट व्हैग्या। बखसीस देवणिया ठाकर तो जमी मे पैठग्या। उणा रासोजी नै हाथ जोड'र श्ररज कराई कै मेहरबानी करनै वै पोतारो श्रो नाटक बद करै। इणरै बदळै आपनै चोखै सू चोखा टाळमा च्यार घोडा मिळ जावैला।

रासोजी उण टारडै नै ठिरडता ठिरडता किलै सू पाछा रवानै व्हैग्या।



कामदार री दुरगत

एकर कोई मोटै ठिकाणै मे कामदार रै बेटै रा ब्याव हो मो दरबार नै ई उठै तेडिया। दरबार रै सागै रासौजी पण उण ब्याव मे गया। ब्याव बीत्या पछै कामदारा री तरफ सू सगळा नै सीख वाडिया हुई। ठावा ठावा नै टोपिया घर बाकी नै लगोटिया। रासोजी नै सीख मे एक मामूली सोक साफो बधायो। महाराजा मानसिहजी रासोजी कानी देख'र मुळकण लागा। रासोजी नै घणी रीस भ्राई।

सभा मे चामडपोम होर्को फिरतो हो। उण माथै चिल मियो ताजो चाढघोडो हो। ताजी मीगणिया भ्रग्नी रै दाणा सी धुकै ही। रासोजी रै वनै इज बीद रा बाप कामदार मा'ब मोटी पाघ वाध्या विराज्या हा। रासोजी नै कुचमाद सूझी सो चिल-मियै मे सू एक ताजी मीगणी लेयर भ्राख टाळो करनै कामदारा री पाघ मे राखदी।

थोडीक जेज मे धू वो निकळण लागो। किणै ई देख्यो तो हाको कियो—कामदारा री पाघडी बळै रै पाघडी बळै। रासौजी जूत लिया वनै त्यार इज बैठा हा सो बुझावण रै मिस जरवा ठरकावण लागा तो मार-मार नै कामदार री टाट पोली कर नाखी।



बाली लूटीजगी

पुराण जमाने मे मारवाड रै राज मे एक मुसद्दी हाकम हो। मर्जै सू पैसो भेळो करणो अर खाणो पीणो नै मोज करणी, भो उणा रो धधो हो। प्रजा रै सुख-दुख रो वानै अगाई ख्याल नी हो।

वा रै हलकै में बाली नाम रो एक गाम हो। एकर समैजोग इसो बण्यो कै धाडविया बाली नै लूटली।

हाकम सा'ब कनै जाय नै प्रजा कूकण लागी कै—प्रदाता बाली लूटीजगी। हाकम सा'ब एकदम ताता होय नै बोल्या—लूटी जगी तो राड रोही मे एकली क्यू जावै ही ?

जनता प्ररज कीवी—हुकम, बाली कोई लुगाई रो नाम कोनी, भो तो एक गाम रो नाम है, जिणनै धाडविया लूट लियो है।

हाकम सा'ब पाछा गरज्या—गाम है तो पछै रोही मे क्यू बसायो ? व्हैला तो लूटीजैला इज।

इसै हाकम नै प्रजा काई पडुत्तर देवती। लोगडा आया ज्यू ई पाछा बूआ गया।



धवला बाल · काला बाल

एक दिन मारवाड नरेस महाराजा मानसिंहजी रासोजी नै पूछ्यो—रासोजी थारै माथै रा बाल तो धवळा अर डाढी मूंछ रा काळा क्यूं ?

रासोजी जवाब दियो—अन्नदाता आ तो सुभाविक बात है। इण मे अपरोखी बात काई है ? माथै रा केस डाढी मूंछा रै केसा सूं बीस बरस मोटा है। इण वास्तै ऐ पैली धवळा पडग्या तो इण में अचूंभै री काई वात है।

महाराजा बोल्या—आ बात तो ठीक है, पण थे देखो मासै एक सरदार बिराज्योडा है। वार माथै रा केस तो सावळा भवर है पण डाढी मर मूंछा धवळी व्हैरी है इणरो काई कारण है ? वारै माथै रै केसा सूं डाढी मूंछा रा बाल बीस वरस नैना कोनी काई ? अर जे नैना है तो पछै पैली धवळा किया व्हैग्या ?

सभा म बैठाड लोगा देख्यो कै अबकै चारण दवता पजग्या। अब काई पडुत्तर देवैला ?

पण रासोजी तुरत जवाब दियो—इणरो कारण ओ है धणिया क डाढी मूंछ रा वाल ता रोटी खावा उतरी वार ई धुपै। कोई तीन वार रोटी जीमै तो तीन वार धुपै अर च्यार वार जीमै तो च्यार वार धुपै। माथै रा केस तो इतरा धुप कोनी। इण वास्तै यारै डाढी मूंछ रा बाल धुप धुप नै धवळा व्हैग्या है।



लाधूवासै जावो

मारवाड रा एक चारण कवि फिरता-फिरता मेवाड़ पूगा। वै मुजरो अरज करण नै राणा रै दरबार मे हाजर व्हिया अर एक कविता सुणाई।

राणैजी राजी होय नै कह्यो—कवि राजा मागो!

कवि मन मे विचार कारण लागो कै म्हू काई मागू! जितरै तो उणरी निजर राणाजी रै काना मे पैरयोडै मोत्या माथै पडी। सोच्यो राणाजी रै काना रा मोती कोई साधारण तो होवण सू रह्या, जरूर कीमती व्हैला। इण वास्तै ए मोती इज क्यू नी मागलू!

कविराज झट बोल्या—

मोटै घर रा छोरू बाजा, मोटो ही दत पावा
काना माइला म्हानै दो तो म्है ई कान हिलावा

राणाजी नै बात की समझ मे नी आई। वै जाण ई नी सक्या कै कविराजा काई चावै है? उणा दरबारिया नै पूछ्यो कै कविराजा री काई इच्छा है?

दरबार मे मेवाड राजघराण रो चारण ई मौजूद हो।

वो झट बोल्यो—बड़ो हुकम बारठजी ठीक अरज करै है—

मोटै घर का छोरू गाजै, मोटा ही दत पावै
कान हिलावण हूंस हुवै तो, साधूवासै जावै।

साधू वासो कनफटै जोगियां रा मठाधीस ठिकाणो हो।

इण वास्तै मवाड़ रै चारण कह्यो के जे बारठजी नै कान हिलावण री हूंस हुवै तो थानै साधूवासै भेज दिया जावै। उठै काना मे मोटा मोटी मुद्रावां पर नै जीवै जितरै ई कान हिलायबो करैला।



वकील बणू ला

बाप र बेटो एकाएक ही सो अणू तो लाड रास नै थोथ रहो कर दियो। बात बात मे बाप रो मू डो तोड़ै। पण इण मे कसूर किणरो? हाथां कीधा कामड़ा सो किणनै दीजै दोस?

एक दिन बेटो बाप रै मूडागै कूड़ झड़पण लागो तो बाप उणनै डाटतो थको बोल्यो—नाजोगा, इतरा कूड़ तो मत बोल्या कर! बेटो झट करतो बोल्यो—थे इज तो कैवो के थनै मोटो व्हियां वकील बणावांला।



चादा बाई चालै नी

मेवाड रा नामी कवि आदीतगिरीजी तीरथ जात्रा करण नै जावा लाग्या। उण वखत मेवाड री गादी माथै सज्जन सिंघजी हा। उणा आदीतगिरीजी नै मारग खरच खातर मेवाड रै सिक्कै मे एक हजारी चदोडी रुपिया निजर किया।

कोई जमानै मे मेवाड रै राजघराणै मे चादा बाई नाम रा कोई बाईजी व्हिया हा। वारै नाम माथै ओ सिक्को चाल्योडो हो। इण सिक्कै रो चलण फगत मेवाड रियासत मे इज हो। कळदार रुपिया मे पलटती वखत इण माथै वट्टो लागतो अर लेवण वाळै रै रुपियै रा फगत बारै आना इज पल्लै पडता।

इण वास्तै आदीतगिरीजी एक दूहो बणाय नै राणाजी नै अरज करी—

चादा बाई चालै नही, दूर सगा कै देस
मन लाग्यो मेवाड मे, हरदया फिर हमेस

चादा बाई दूर सगा रै देस मे बारै कठैई चालै कोनी। कारण कै इणा रो मन तो फगत मेवाड मे लाग्योडा है, इण वास्तै ऐ तो अठै इज रेवैला।

राणाजी वात नै समझग्या। वानै आदीतगिरीजी रै ओपतै कथण माथै घणी हूंसी आई। उणा उतरा हो सरूपसाही रुपिया देवण रो हुकम दियो। मेवाड रियासत रो सरूपसाही रुपियो उण वखत मेवाड रै बारै सतरै आना मे चालतो हो।



मायड भासा

कोई जमानै में बंगाल में नदिया नाम री एक छोटी सीक रियासत ही। उठै र हिंदू राजा रो नाम महाराज किसनचद्र हो। आ रियासत मुरसिदाबाद र नवाब रै पट्टै में आयोड़ी ही।

नदिया रै दरबार में एकर एक इसो पडत आयो कै बो आठ दस भासावा फराटै सागै बोलणो जाणै हो। राजा अर सग ळाई दरबारी हैरान व्हैग्या पण आ बात नी जाण सक्या कै पडत री मायड भासा किसी है।

दरबार मे गोपाळ भाड नाम रो एक मसखरो रैवतो। बो बोल्यो कै अन्नदाता रो हुकम हुवै तो पडत री मायड भासा रो पतो तो म्हू लगाय दू।

राजा री तरफ सू उणनै मजूरी मिलगी।

एक दिन वो पडत राजमहल रै पागडिया सू नीचे उतरतो हो कै गोपाळ भाड ठेट ऊपर सू उणनै धक्को दे दियो। पडत नीचो गुडकण लाग्यो अर गुडकतो गुडकतो सुद्ध मायड भासा मे भाड नै गाळा काढण लागा।

भाड राजा नै कह्यो—सुणलो अन्नदाता पडत री मायड भासा! कोई किनरोई विद्वान हुवो पण माथै मुसीबत आयनै पडसी जद तो मायड भासा इज बोलसी।

सूमटै नै आप किनगाई पढाय दो, बोलणो सिखाय दो, पण जिण वखत उणनै कोई मिनकी आय नै पकडसी, उण वखत वो सगळी बोलिया भूलनै फगत टैं टैं करसी।

मिल्योड़ी घडी

पान री दुकान माथै ऊभै एक आदमी दूजोडै नै पूछ्यो — काई भाई सा'ब आपरी घडी मे टेम काई व्हियो सा ?

घडी वाळो बोल्यो—ठीक आठ बज्या है सा ! टेम पूछण वाळै पाछो पूछ्यो—क्यू सा आपरी घडी रेडियै सू मिळयोडी है कै रेल्वाई सू मिळयोडी है ?

घडी वाळै हसता थका पडुत्तर दियो—घडी नी तो रेडियो सू मिळयोडी है अर नी रेल्वाई सू । घडी म्हनै तो म्हारै सासरै सू मिळयोडी है सा ।

फोटू मे खुसबू

एक अनाडी आदमी फोटू खिचावण नै बैठो । फोटूग्राफर पूछ्यो—कहो त्यार हो ? खेंचलू फोटू ?

अनाडी बोल्यो—थोडो ठैर जाईजे भाया ।

फोटूग्राफर पूछ्यो—क्यू काई बात है ?

अनाडी कैवण लाग्यो—थोडो मनै कपडा मे इत्तर लगावण दीजै भाया । नी तो पछै फोटू मे खुसबू किया आवैला ? अर बिना खुसबू वाळो फोटू किण काम रो ?



नवाबी महाभारत

मुरसिदाबाद री नवाब अधगैलो अर सनकी हो। उणँ पातारै मातहत नदिया रियासत रै राजा किसणचद्र नैं समाचार भेज्यो कै हिंदुवा रो ग्रथ महाभारत मनैं घणो चोखो लागो। इण वास्तैं इसो रो इसो एक नवाबी महाभारत म्हारै नाम सू लिखाय नैं त्यार करावो। मन उणरी तुरत जरुरत है।

नदिया रो राजा विचार मे पडग्यो कै इण अधगैलै नैं किया समझावणो। अर समझाया सू ई बात मफा ऊधी पडैला। राजा गतागम मे पजग्या।

गोपाळ भाड नैं इण बात री ठा पडी तो वो राजा कनै पूगो अर बोल्यो कै आप चिंता मन करावो। म्हूं नवाब रो महा भारत लिख दू ला।

इणरै पछ तीन च्यार वरस ताई हजारा रुपिया नवाब रै मठै सू महाभारत रै नाम माथै आवता रह्या।

छेवट एक दिन भाड दो तीन छकडा म कागदिया भर नै नवाब रै आगै हाजर व्हियो अर अरज करी—हजूर नवाबी महा भारत त्यार है। फगत एक बात बाकी रैयगी है, वा आपनै पूछ नैं लिखणी है, सो हजूर फरमाय दिरावो तो काम सपूरण व्है जावै।

नवाब बोल्यो—बोल काई बात है ?

भाड कह्यो—हजूर हिंदुवा रै महाभारत मे द्रोपदी र पाच पति है। उण हिसाब सू हजूर री बेगम रै ई पाच खामद

व्हैणा चाहिजै । उण मे एक तो आप हो । दूजा च्यार जणा कुण-कुण है, सो आप फरमाय दिरावो तो म्हू इण मे लिखदू । नाम दरज किया पछै नवाबी महाभारत पूरो है ।

अघगेलियो नवाब रीसा बळतो बोल्यो—लाहोल विला कुव्वत ! हटाओ ऐसे महाभारत को हमारे सामने से ! हमको जरूरत नहीं है ।

भाड बोल्यो—जो हुकम अदाता !

अर छकडा आया ज्यू पाछा रवान व्हैग्या ।



घडी रो ड्राईवर

एकर एक आदमी घडी मोल लीवी । घडी कोई जूनो खोखो ही सो थोडा क' दिन चालर बद व्हैगी । वो उणनै लेयर एक घडीसाज कनै गयो ।

घडीसाज उणरै मू डागै ईज घडी नै खोली तो मायनै सू एक मरघोडो माछर बारै पड्यो ।

उण आदमी झट मरयोडै माछर नै हाथ मे लियो अर सोच-विचार नै घाटकी हिलावतो बोल्यो—ओ हो ! अबै ठा पडी । म्हूं कंवू , रे घडी चालै क्यू नी, पण चालै कठै सू ? इणरो तो ड्राईवर इज मरग्यो, पछै किया चालै ?



डेमफूल

एकर साव रै बगलै मायं एक गामठी मणपढ आदमी नौकर रह्यो। काम काज करती वखत वो पूरी सावचेती राखतो पण हेवा नी होवण सू कोई न कोई छोटी मोटी गळती व्है ईज जाती। एकर उणरै हाथ सू कप तासक फूटग्या। साव रो पारो एक दम ऊंचो चढग्यो, वै रीसा बळता बोल्या—यू डेमफूल !

नौकर एकदम घबरीजग्यो। वो डरतो डरतो हाथ जोडतो बोल्यो—फूल तो, हुकम, आप हो, म्हू तो आपरै मू डागै घास फूस हू। हमारी गरीब री इसी काई हैसियत सो आपरै बिराज्यां थकां म्हारी फूल बणण री बारी आवै ?

साव उणरै मू डै कानी दखता रैयग्या।



भाठै जितरो वोझ

एक आदमी नामी मसखरा हो। साथी उणरी मसखरिया सू कई वार तंग व्है जाता। एकर उणै पोतारै एक साथी री मसखरी करण खातर उणरै नाम सू बेरंग पारसल भेज्यो। साथी उणनै पैसा भर नै छुडाय लियो। घरा जाय नै पारसल खाल्यो तो मायनै सू कागद रा एक नैनोसीक पुरजियो निकळ्यो। उण माथै लिख्योडो हो—म्हारी तबियत ठीक है, थू चिंता मत करजै।

साथी दख्यो आ जबरी चोट करी हरामखोर। पण खैर मौको आवण दो। थोडा'क दिना पछै उण पारसल भेजणियै मसखरै साथी रै नाम व्ही० पी० आई। व्ही० पी० उण छुडायली। पण घरा जाय नै खोली तो मायनै एक भाठो अर कागद रो पुरजियो निकळ्यो।

पुरजियै माथै लिख्योडो हो—थारी तबियत रा हाल चाल पढनै म्हारै मन माथै सू इण भाठै जितरो बोझो उतरग्यो। म्हू ई अठै राजी खुसी हू। थारी कुसळता रा समाचार लिखतो रहीजै।



सादू वाली कौगत

एकर दो सादू वारै सासरै मे भेळा व्हिया । दोनुवा में एक मारवाड रो रैवासी हो अर दूजोडो मेवाड रो ।

सझ्या रा दोयू जणा भेळा जीमणनै बैठा । मारवाडी थाळी कानी निजर नाखी तो चूरमो थोडो निजर आयो । उण मन मे विचार कियो इतरै चूरमै सू तो म्हारो एकलै रो ई पेट कोनी भरीजै ।

उण मेवाडी सादू नै बतळावता कह्यो—आपरो मेवाड तो, सुण्यो ह कै, घणो सजळ इलाको है । उठै तो कई चीजा पाकती व्हैला । मेवाडी राणा उपस नै ढोल व्हैग्या । चवडा पड नै कैवण लागा— हा सा, मेवाड तो मेवाड ही है । उठै मोकळी चीजा पाकै ।

—काई काई चीजा पाकै सा ? मारवाडी पूछ्यो ।

—म्हा कै उठै ? म्हा के उठ आबा पाकै आबलिया पाकै ,यो आगळिया माथै गिणावण लाग्यो—नीबू पाकै, सीता-फळ पाकै, जामफळ पाकै, सेलडो पाकै, मक्की पाकै......।

मेवाडी गिणावतो रह्यो अर मारवाडी गबा गब चूरमो

ठरकावतो रह्यो। सगळी चीजा गिणाया पछै मेवाडी पूछ्यो—आपकै अठै काई काई पाकै जी महाराज ?

थाळी मे चूरमैं रा दो च्यारेक कवा बच्या हा, वानै निवे डतो थको मारवाडी बोल्यो—म्हारै अठै ? म्हारै अठै काई पाकै सा ! म्हारै अठै तो केर, बोर नै सागरिया ! मेवाडी मन मे अणू तो राजी व्हियो पण नीचै देख्यो तो थाळी साफ ही।



पक्की राग

एक मेम साब नै पक्की राग रो सौक लागो। अब वा हर वखत अलाप लगावण लागी। एक दिन सझ्या री वखत वा अलाप लगावै ही कै साब घरा आया। नौकर बारलै कानी बगीचै मे काम करतो हो। साब आवता ई नौकर नै पूछ्यो—काई रे रामा ओ बगलै मे रोवै कुण है ? नौकर हसतो थको बोल्यो—रोवै कोनी है सा, मेम साब पक्की राग रो अभ्यास करै है।

साब बोल्या—धूड इसी पक्की राग रै लारै।



तागै रो भाडो

एकर एक गामठी आदमी कोई काम सूं सहर मे गयो। वो आपरो काम काज निवेड़ नै पोतारो बीटो खराक मे लियां पाछो घरा जावण खातर टेसण कानी रवानै व्हियो तो मारग मे एक तागो मिळ्यो। वो ई उणरै आगै-आगै टेसण कानी जावै हो।

गामठी तागै वाळै नै पूछ्यो—काई भाया टेसण ताई रो काई भाडो लेवै ? तागै वाळो बोल्यो—एक रुपियो !

—अर इण बीटै रो काई भाडो लेवैला ?

—बीटै रो की नी लेवूं, ओ मुफत मे ले चालूं ला।

—तो भाईडा म्हारो बीटो तो टेसण ताई ले चाल। म्हूं तो पैदल ई आय जावूं ला।



लुगाई व्हैला थारी

एकर एक आदमी रेलगाडी मे सफर करै हो। उणरै सागै उणरी बैन ही। माती मतवाळी मरारी व्हियोडी, हथणी व्है जिसी। पूरी ढाई मण री लाम। वा आधी मीट घेर नै भैंस री गळाई पसरयोडी बैठी ही।

डिब्बै मे खासी भीड ही। आगलै टेसण सू की नवा मुसाफर ओरू चढ्या। एक नवजवान मुसाफर बडबडावण लागो—कोई नै तो पगा मार्थ ऊभो रैवण मैं ई जागा कोनी अर कोई एक एक मुसाफर तीन तीन जणा री जगा रोकनै बैठ जावै। टिगट सब जणा लिया है। भैंस री गळाई पसर नै विराजणो व्है तो पोतारै घर मे बेठै, आ तो रेलगाडी है, कम सू कम अठै तो की विवेक राखणो चाहिजै।

पण भाई बैन दोयू जणा कान गिनारो कर लियो।

नवजवान नै रीस आई। वो उण आदमी नै कैवण लाग्यो—थारी लुगाई नै समझाय दै यार, थोडो ढग सू बेठै! म्हे कणाकला पगा मार्थ ऊभा हा। थारी आंख्या फूटयोडी है काई?

इतरो सुणता ई उण आदमी नै तबोळ चढी। वो रीस मे

आधो हुयोड़ो उतावळो होयनै बोल्यो—साळा, नालायक ! बिणंत लुगाई बताव ! लुगाई म्हैला थारी । म्हारे तो मगी मा जाई बेन लागै ।

—तो पछै बेनोई सा न आराम सू बिठाय दो—डिब्बे रे एक खूणे सू आवाज आई अर सगळो डिब्बो हो हो करतो हसण लाग्यो ।

◈

ठोट माटसाव

एक नैनो टाबर पैलो पैल स्कूल मे पढण वास्तै गयो। सझ्या रा घरा आयो तो मा उणनै लाड करतां पूछ्यो—काई बेटा स्कूल किमीक लागी ? चोखी है क नी ।

टाबर बोल्यो—मा स्कूल तो घणी चोखी है, छोकरा ई ठीक है । पण म्हारै माटसाब तो सफा ठोट है । वानै काई नी आवै । मा पूछ्यो—थनै काई ठा कै वै सफा ठोट है ? बेटो बोल्यो—ठोट नी तो पछै काई है ? वै मनै पूछण लाग्या कै एक नै एक कितरा व्है ? ओ ई वान ठा कोनी कै एक नै एक दो हुवै !

◈

वकील रै घर मे चोरी

एकर एक चोर कोई वकील साब रै घर मे चोरी करण नै घुस्यो। झलोझल ग्राधीक रात, च्यारू मेर सरणाटो। घर मे सगळाई गैरी नींद मे सूता हा कै की खुडको सुणीज्यो। वकील साब री स्वाननिद्रा ही सो वै जागग्या। उणा झट रोसणी कीवी अर चोर घबरीजग्यो।

वकील साब चोर नै थावस देवता कह्यो—देख तू घबरीज मत। अठीनै म्हारै कनै आय नै बैठजा। दूजो कोई मारग नी देखर चोर वकील साब रै कनै आय नै बैठग्यो।

वकील साब उणनै समझावता थका बोल्या—मोटयार आदमी है, मैणत मजूरी करनै पेट भराई कर सकै है, ओ चोरी रो सूगलो धधो क्यू कर है ? म्हारो कैवणो मानै तो ओ नपावट धधो छोड दै। थारी जिंदगी सुधर जावैला अर म्हू थनै पुलिस मे ई नी देवू ला।

चोर वकील साब रा पग पकडतो बोल्यो—अबै जीवतो ई ओ धधो नी करू।

चोर उठनै जावण लागो तो वकील साब उणनै बिठावता

कह्यो—आवै कठै है ? म्है थन सलाह दीवी जिणरो मेणतानो बीस रुपिया होवै सो निकाळ बीस रुपिया, पछै भलाई जाय सकै है तू ।

चोर झट बीस रुपिया निकाळर वकाल साब रै निजर किया अर उण दिन पछै कोई वकील रै घरै चोरी करण रो हाथ पाणी लेलियो ।



माकूल जवाब

एक भलै आदमी रै पाडोस मे एक लडोकडी लुगाई रैवती । आदत सू लाचार होवण रै कारण वा नित रोज लडाई करणनै त्यार रवती । भलो आदमी पण उण सू आती आयोडो हो । एक दिन दिनूगै इज वा उण पाडोसी सू आय भिडी अर मूडै मे आवै ज्यू बोलण लागी—तू नीच है, तू नालायक है, तू रागस है, म्हारै तो इसो घर धणी व्हैतो तो म्हूं उणरै चाय रै प्याले मे जहर नाख देवती ।

पाडोसी ठीमरपणै सू बोल्यो—अर म्हारै था जिसी लुगाई व्हैती तो म्हू वा चाय गट गट करतो पी लेवतो ।



दो गप्पी

दो गप्पी बैठ्या गप्पा मारै हा। दोन्यू एक एक सू आगला। एक जणो बोल्यो—म्हारा पिताजी वडा टणकेल आदमी हा। पूरै चोखळै मे वारी धाक जम्योडी ही। वानैं घोडा रो अणू तो सौक हो। कठई कोई चोखो घोडो देखता कै उणनैं मोल लेय लेवता। इण भात वारी घुडसाळ मे एक सू एक टाळमा घोडा भेळा व्हैग्या। अबै इतरै घोडा रै वास्तै घुडसाळ पण सागोपाग चाहिजै। इण वास्तै उणा एक जबरदस्त घुडसाळ त्यार कराई। इसी जब रदस्त कै उणरै बरोबरी री घुडसाळ पूरै समार मे कठै ई कानी ही। वा इतरी मोटी ही कै कोई आदमी जे बारै बरसा ताई उण मे फिरतो रेव तो ई उणरो छेत्राडो नी आवै।

दूजोडो गप्पी बोल्यो—पिताजी तो म्हारा ई घणा जबरा हा। वारै कनै एक टणको बासडो हो। जे कदैई बरसात नी व्हैती तो वै उण बामडै नै लेय नै जोर सू आभै मे हिलावता अर इण सू बरसात मरू व्है जाती। उस फगत बासडो हिलायो नी अर अरडाट करतो मेह बरसणो सरू व्हियो नी।

पैलडो गप्पी बोल्यो—बात तो थै जोरदार कही पण थारा पिताजी इतरो मोटो बामडो राखता कठै?

दूजोडै गप्पी पडुत्तर दियो—थारै पिताजी वाळी घुड साळ मे।

नेताजी री पैंठ

चुणाव रा दिन नैडा आया। इणसूं नेताजी रै मन म प्रजा वास्तै प्रेम जागो। वै पोतारै चेला चांटिया री मडळी लेय नै वारै गामडै मे निकळया। वै घर घर जावता अर लोगां नै घण हेत सूं मिळता, वारो सुख दुख पूछता अर वाट री भीख मागता।

गाम मे फिरता फिरता वै एक भूंपडै आग पूगा। उठ बारल कानी एक छोरी गाय नै दूवती ही अर उणरी मा मायन बैठी ही। नेताजी जाय नै छोरी सूं उणरै बाप रै बाबत पूछ नाछ करण लागा कै वो कठै गयोडो है।

गणमणाट सुणनै उणरी मा मायनै बैठी पूछ्यो—छोरी किणसूं बाता करै ए? भट गाय नै दूव नै मायनै मर!

आवाज सुण नै नेताजी रा चेला-चांटी बोल्या—माजी नेताजी थार घरा पधारया है अर थारै सुख दुख री बात पूछणी चावै है।

मायनै सूं आवाज आई—सुणै ए छोरी! चरवी नज वणी अर पाटियो, सगळी चीजा सभाळ नै मायनै लेवती आईजै। इसी नी व्हैं कै कोई चीज बारै छूट जावै अर हाथ सूं गुमाय नै हेटा बैठा।



थारी थू जाणै बाई

एकर एक लुगाई नै रेलगाडी मे कोई दूजै गाम जावणो हो। सागै उणरो बेटो हो। घर री खाळ डीगी होवण सू उणरै बेटै नैनी उमर मे ई डील खासो कर लियो हो। टेसण माथै पूगा उणरी मा उमर रै हिसाब सू उणरो आधो टिगट लियो अर मा-बेटो गाडी मे बैठग्या।

एक दो टेसण निकळचा व्हैला कै टिकट चेक करतो करतो टी० टी० ई० वारै डिब्बै मे आयो। लुगाई कनै डोढ टिगट देख नै वो बोल्यो—बाई पैसा निकाळो। लुगाई बोली—पैसा फेर किण बातरा बाबूजी ? टिगट दोयू मा बेटा रा म्हारै कनै त्यार है, पछै आप पैसा किण चीज रा मागो हो।

टी० टी० ई० बोल्यो—थारो छोकरो बारै बरस सू ऊपर रो है, थे उणरो आधो टिगट लियो है, हिसाब सू टिगट पूरो लेवणो चाहिजै।

लुगाई रीसा बळती बोली—बाबूजी थे ई किसी विलळी बाता करो। बारै बरस तो म्हनै ब्याव किया नै ई कोनी व्हिया पछै छोकरो बारै बरस रो कठै सू व्हैग्यो ?

टी० टी० ई० ठीमरपणै सू कैवण लाग्यो—वा तू थारी जाणै बाई, ओ थारो प्राइवेट मामलो है। म्हू इण बाबत काई कैय सकू ? म्है तो टाबर नै मोटो देख्यो सो कैय दियो। टिगट तो इणरो आखो लेवणो इज पडैला।



अमली वाली खाज

एक अमली दिनूग उठयो अर नसै री झेर म बैठो रैठो माचै रो पागो कुचरण लाग्यो। उणरी लुगाई नैं आ रासो देख नैं घणो अचूभा व्हियो। उण अमली नैं पूछयो—बात काई है? माच रो पागो किया कुचरण लागग्या हो दिनूगै उठता पाण?

अमली आंख्या मीच्या धीरै-धीरै बाल्यो—तू थारो काम कर, म्हारै तो पग मे खाज आवै है सो खिणू हू। तू प्रभात र पोर म क्यू बडबडाट कर है?

लुगाई बोली—करम फूटग्या। खाज खिणो जिको माच रो पागो है, थारो पग कोनी है। अबै जावती अमली री झेर टूटी। बाल्यो—म्हूं तो जाण्यो क म्हारो पग इज है।



मतै ई फंस जावैला

एक आदमी कोई ऊचै ओहदै माथै नोकर हो। बडो मिलणसार अर सुभाव रो मसखरो। वो एकर पोतारै सगा रै उठै मिळणनै गयो।

सगैजी रै एक पढ्यो लिख्यो लडको हो जिको नौकरी नी मिलण सू घरै बेकार बैठो हो। मजै सू टुक्कड तोडतो अर गाम मे मटरगस्ती करतो। थोडाक दिना मे उणरै बाप कनै ओळभा आवण लागा। बाप दुखी व्हैग्यो। उणनै बेटै री बेकारी री जितरी चिंता नी ही, उतरी उणरै कारण आवतै ओळभा री फिकर ही।

सझ्या री वखत व्याळू सू निवड नै दो'यू सगा नैरात सू गप्पा मारण बैठ्या तो मौको देखनै लडकै रै बाप सगा नै अरज कीवी—आप जिसा जोगा गिनायत चोखै ओहदै माथै बिराजो हो अर आपणै भमरियो कई दिना सू बेकार बैठो है, इणनै ई कठै ई फसाय देरावो नी ?

सगैजी पूछ्यो—आपर कुवर साब री उमर काई है ?

—आ इज कोई बीसेक बरस री।

—वारो व्याव आप कर दियो कै नी ?

—व्याव तो हाल कोनी कियो सा !

—तो पछै मनै अर आपनै कोई चिंता करण री जरूरत कोनी। वै तो कठैई नै कठैई मतै ई फस जावैला।



कायम रो मारग

एकर एक डरपोक आदमी पोतारै घर में सूतो हो क उणरै पेट माथै होय नै एक ऊंदरो निकळग्यो। डरपोक जोर जोर सूं रोवण लागो। काकारोळो सुण नै लोग राग भेळा व्हैग्या अर उणनै धीरप देवता थका रोवण रो कारण पूछण लागा। ज्यूं ज्यूं वै पूछता जावता, वो तर तर जोर सूं रोवतो जावतो। सगळा ई ओ खावो देखनै हैरान व्हैग्या। छेवट एक दानै आदमी रीसा बळता कह्यो—यूं लुगायां री गळाई रोवै काई है रे खूटोड़ा! मूंडै सूं की बोल तो खरी कै थारै व्हियो काई है?

डरपोक रोवतो रोवतो बोल्यो—म्हारै पेट माथै होय नै ऊंदरो निकळग्यो। बात सुण नै सगळाई हसण लागा तो वो रोवतो रोवतो कैवण लागो—ये सगळाई हसो क्यूं नी! थारै दैण काई है? लागै जिणरै घरवरै अर दुखै जिणरै पीडा, गिर तो म्हारै जीव न हुई है। थारै तो तमासो देख नै तालियां बजावणी है।

लोगां पूछ्यो रे खूटोड़ा इसी काई गिरै व्हैगी है थारै? निकळ्यो तो पेट माथै सूं ऊंदरो ईज है'क?

वो बोल्यो—गिरै किया नी हुई है! आज तो पेट माथै होय नै ऊंदरो निकळ्यो है, कालै कुत्ता मिन्नी निकळैला अर पछै कायम मारग पड़्या सूं बाघ चीतरा ई निकळ सकै है। म्हारा तो करम फूटग्या रे! अर वो फेरूं जोर-जोर सूं रोवण लाग्यो।



रामरस

एक रबारी रोज एवड चारण नै सीमाडै मे जावतो। रबारण घरै इज रैवती। गाम मे सत्यनारायण रै मंदिर मे कथा चालती सो रबारण नित उठै सुणण नै जावती। कथा खतम व्हिया उठ जिको चरणाम्रित रो प्रसाद मिळतो उण नै वा रामरस कवती। प्रसाद घणो स्वाद लागण सूं वा रोज सिंझ्या रा रबारी रै मूंडागै उणरा खूब वखाण करती। वा कैवती—राम रस अम्रित रा ईंज घूंटिया। इसी स्वाद चीज तो म्हैं म्हारी उमर मे ई कोनी चाखी।

एक दिन रबारी बोल्यो—तू रोज-रोज रामरस चाखै एक दिन तो मनै ई चाखण दै भली मिनख!

रबारण मानगी। उण दिन वा एवड चारण नै रोही मे गई अर रबारी कथा सुणवा नै मंदिर मे गयो। कथा री वखत मंदिर मे भीड घणी ही सो रबारी बार चूंतरै माथै इज बैठग्यो। गैहरी छिया अर ठंडा पवन, थोडी ताळ मे इज उणनै ऊंघ आयगी अर वा वाको फाडनै घोर खाचण लागो। इतरै मे एक कुत्ता आयो सो टांगडो ऊंचो करनै उणरै मूंडै मे मूत दियो। कथा खतम व्हिया आख खुली तो राईकाजी रो मूंडो खारो—जै'र! रबारी सोच्यो रामरस खारो इज होवतो व्हैला। उणनै रबारण माथै घणी रीस आई। सझ्या रा मिळता पाण रबारण उण नै पूछ्यो—बोलो किसो'क लागो रामरस? रबारी करकडो साद नै बोल्यो—

राड थारो रामरस, खारो-खारो विस!

भांवी वाली भैंस

एकर एक भाबी अर भावण भैंस मोल लेवण री विचार कियो। भावण बोली—भैंस लिया पछै घर में बोहळो घीणो रैवैला इण वास्तै म्हारी मा रै अठै दही री एक कुलडो रोज पुगा दूं ला। म्हारी मा नै दही रा घणू तो सौक है।

भाबी बोल्यो—मूंडो मूंडो थारो अर थारी मा रो। भैंस लावा तो घर रैं वास्त लावा कै मिनखा रैं वास्तै लावा? थारी मा न इतरो ईज दही रो सौक व्है तो गोबर क्यूं नी खावै!

—गोबर खावै थारी मा। म्हारी मा बापडी घर रै खावणै-पीवणै थका गोबर क्यूं खावै? भावण बोली।

भाबी नै आई रीस सो भावण न मार्गेडी बजाय दी। वा जोर-जोर सूं कूकण लागी। काकारोळो सुण न एक बारठजी उठै पूगगा। उणा भाबी नै धुरकारता थका वारै रगडै रो कारण सुण्यो।

बात पूरी सुणनै बारठजी खाव नै एक जमाई ऊंधै हाथ री भाबी रैं भोगन मे भडाक करती। भाबो कूकण लागो—अरे बापजी मनै क्यूं मारो रे!

बारठजी बोल्या—नालायक! थारी भैंस म्हारै खेत मे

रात रा निरो ई विगाड कर दियो। तू उणनै सावळ बाघ नै क्यू नी राखै ?

भायो बोल्या—अरे अन्नदाता अठै तो भैस अर किसो विगाड ?

बारठजी बोल्या—तो पछै थारी मा नै मार-मार नै उणरा हाडका जोजरा क्यू किया रे, हरामी ?

भाईडो कनपटो पपोळण लागो।



सारस वाळो टाग

पोसाळ रै छोकरा नै गुरूजी पवलिक बाग मे लेय नै गया। उठै वा नै बाघ, चीतरा बादरा, जिराफ खच्चर अर हिरण इत्याद दिखाया। पछै वानै चिडियाघर मे लेग्या। जळ रा पछिया मे सारस एक टाग माथै ऊभो हो। गुरूजी छोरा नै पूछ्यो—बतावो ओ सारस एक टाग माथ क्यू ऊभो है ? घणी ताळ सोच विचार नै एक छोकरै जवाब दियो– म्हारै विचार सू जे ओ दूजी टाग ऊची कर लेवै तो नीचो आय पडै। इण वास्त डरतो थको एक टाग माथै ऊभो है।



खम्मा घणी

एक ठाकर साब दारू मे घरा व्हियोड़ा महल सू नीचे पधारता हा कै ताणी भाय नै हेटा पड़ग्या। पावडिया री नाळ खासी लाम्बी ही। ठाकर ऊपर सू गडद गडद करता नीचे गुड़कण लागा।

पावडिया सू नीचै ठाकरा रा चाकर बागरू अर दरोगा ऊभा हा। उणा ठाकरा नै हेटै पड़ता देख्या तो सगळा ई एक साथै बोल्या—खम्मा घणी! पण ठाकर तो ज्यू देखै ज्यू गुड़कता ईज नीचै आया। अबै उठीनै तो ठाकर ऊपरलै पावडियै सू नीचलै माथै गुड़कता अर अठीनै खम्मा घणी री रट लागती! गडद! कै खम्मा घणी! गडद! कै, खम्मा घणी!

बठै ईज एक जाट ऊभो हो। ठाकर छेलै पावडियै सू जमी माथै पड़ण लागा कै जाट बोल्यो—हे अरड़ सू पदा हो! ठाकर नीचे पड़ता पाण अचेत व्हैग्या। दरोगा कणवारियै जाट नै धुत्कारण लागा—मूरख, जिनावर! तनै बोलण री ई होस कोनी? ठाकर साब तो नीचे पोढ्या है अर तू यू कीकर बोल है?

जाट कँवण लागो—बोलण रो होस किणनै कोनी ? थानै कोनी कै मनै ? थे कणाक्ला ई ऊभा ऊभा खम्मा घणी खम्मा घणी करता रह्या अर तोई ठाकर गुडकता ईज गया। पण म्हारै मरड भूचदा हो कह्या पछै चुळिया ई व्है तो बोलो। अबै बतावो थारी खम्मा घणी वत्ती कै म्हारो मरड भूचदा वत्ती ?



उपासरै मे कुत्तो

एकर कोई गुरासा रै उपासरै मे कुत्तो बडग्यो। गुरू-चेलो दो यू जणा बारै चौकी माथै बैठा हा। चेलो बोल्यो—गुरासा गुरासा ! उपासरै मे कुत्तो बडग्यो।

गुरासा नैठाव सू बोल्या—ग्राडो लगाय नै कूटो जड दै बेटा। कुत्तो मायनै छो वैठो। चेलै पूछ्यो—ग्रो क्यू सा ? गुरासा बोल्या—कुत्तो बारै निकळ्यो तो फेर कोई रै घर मे जाय नै बिगाड करैला। ग्रापणै उपासरै मे तो काई खावण पीवण नै है कोनी, वापडो च्यारू खूणै ग्राणद सू छोनो फिरसी।



भैरूं री पूज

एक सेठ रै घर मे तो रामजी राजी हा पण सेठाणी रै पेट नी मडनो हो। सेठ इण कारण घणो दुखी हो। उण मोकळा कळाप किया, पण बानडो जमो कोनी।

छेवट किणी ई सलाह दीवी कै भैरू जी नै पाडो चढ़ावण री बोलमा करी होवै तो कामडो पार लाग जावै। सेठ हैरान व्हियोडो हो सो बोलमा करदी। कोई सजोग री बात कै सेठाणी रै आसा रैयगी अर नवमै महीनै बेटो ई व्हैग्यो।

अबै भैरू बाबा नै राजी करणा जरूरी हा। इण वास्त सेठ एक पाडो मगायो अर रातरा छानै-छानै लिजाय नै भैरू जी री पूतळी रै काठा बाध दियो। पछ हाथ जोड नै अरज कीवी— भली करजे भैरू बाबा, म्हैं ना म्हारो वचन पूरो कर दियो। अब तू जाणै अर थारो पाडो जाणै।

पाडो थाडी ताळ तो चुपचाप ऊभो रह्यो। पछै की अट पटाई लागी तो छूटण वास्तै हच्चीडा देवण लाग्यो। दो तीन हच्चीडा जोर सू दिया कै भैरू बाबै री पूतळी उखड नै बारै आयगी।

अबै पाडो चालण लाग्यो अर भैरू बाबो लारै-लारै ठिरडीजण लाग्या। मारग मे माताजी रो थान पडतो हो। भैरू बावै री आ दुरगत देख नै माताजी पूछयो—भैरू बाबा! ओ काई रासो व्हैग्यो? भैरू बोल्यो—तनै ठा कोनी देवी, तै फगत थान माथै बैठ नै कोरा भाला घुमाया है, सेठा नै वेटा कोनी दिया। नी तो तनै ई ठा पड जावती।



वसीयतनामो

एक करोडपति रै मरया पछै, उणरी वसीयत सुणण वास्तै सगळो परिवार भेळो व्हियो। सगळा नै ई उम्मीद ही कै थानै काई मिळैला। छेवट वकील लिफाफो खोल्यो अर वसीयत पढणी सरू करी। लिख्यो हो—म्हू म्हारै होस हवास मे होवण रै कारण सगळी जायदाद बेच खाई है।

सगळा उम्मीदवार हाथ मसळ नै हेटा बैठा।



फेरूं आईजे

एकर एक ढाली रात रा पोतारै झूंपड़ै मे सूतो हो। रात आधी'क ढळी व्हैला कै एक चोर मायनै आयो। खड़बड़ाट व्हिया सूं ढोली री आंख खुलगी। उण चोर नैं देख लियो। तोई पण वो चुपचाप सूतो सूतो तमासो देखण लाग्यो। चोर अंधार मे झूंपड़ै रे च्यारू मेर फिरग्यो, पण उणनै कठै ई की नीं लाधो। छेवट एक खूणै मे सांगरियां सूं भरयोड़ी एक बोखी मादळा मिळी। चोर माच्या, खैर सल्ला सांगरिया ई सही।

उण ढोला रै माचै रै कनै पोतारो कांबळो बिछाय न माथैं मटकी ऊंधाय दी। ढोली मोको देखर झट आळस मरोड़ण रो मिस कियो अर पसवाड़ा फेरतो थको माचै माथै सूं गुड़क न नीचै कांबळै माथै पड़ग्यो। चोर घणी ताळ बाट जोवतो ऊभो रह्यो कै ढाली पसवाड़ो फेरै तो गाठड़ी बांध नें तेतीसा मनाऊं। उणनै बाट जोवतो देख नै ढोली नै हसणो आयग्यो। वो हक डक करतो जोर जोर सूं हसण लाग्यो।

उणरो हसणो सुणर चोर उतावळ मे नाठो। झूंपड़ै मे ठौड़ ठौड़ थाभा लाग्योड़ा हा। अंधारो होवण सूं चोर रै माथ मे एक थांभो आफळियो हक्नीड करतोड़ो। भच्चीड सुण न ढोली बोल्यो—ठैर बेटा फेरूं आईजे।

चोर दौड़ता दौड़तो बोल्यो—धूड थारै लारै, घर री गाठ रो कांबळो ई थारो छाती मे वाळ नें जाऊं हूं फेरूं पाछो आऊं सो गेलो थोड़ा ईज हूं। ◈

पाघड़ी भैंस खायगी

जूनै जमानै री बात है। मारवाड़ मे एक मुसद्दी हाकम हा। पक्का रिस्वतखोर अर अणूता लालची। एकर वारी अदालत मे एक सेठ कोई जाट रै खिलाफ दीवाणी दावो पेस कियो।

सेठ नै इण बात री पक्की जाण ही कै हाकम साब बिना लिया दिया कोई काम करै ईज कोनी। सो सेठ पोतारी दुकान सू एक बढ़िया पाघड़ी लिजाय नै हाकम साब नै निजर कीवी, जिणसू कै फैंसलो उणरै हक मे होय सकै।

आ बात जाट रै काना पूगी तो उणनै घणी चिंता हुई। भाई सैण सू सलाह लीवी अर एक भैंस लिजाय नै हाकम साब रै घरा बाध दी।

पेसी वाळै दिन दो यू आसामिया अदालत मे हाजर हुई। पेसी री वखत सेठजी हाकम साब नै याद दिरावता बोल्या—म्हारा पाघड़ी री लाज आपरै हाथ मे है सा ! हाकम साब सेठा रा इसारो समझग्या। उणा झट पडुत्तर दियो—पाघड़ी तो भैंस खायगी सेठा ! अर फैसलो जाट रै हक मे दे दियो।

सेठ जी पाघड़ी पपोळता रवानै व्हैग्या।



बारठजी वाली आगली

एकर एक बारठजी रै ग्रठै कोई मारगू पावणो आयग्यो। आदमी की दीसतो वास्तो ग्रर ठरकै वाळो हो, इण वास्तै बारठजी उणरी पूरी आगना सागता करण रो विचार कियो। उणनै आउ कारो देय नै ग्राळ मे बिठायो।

बारठजी रै घर मे मफा थाकैलो हो, सो पावणै नै बिठाय नै वै गाम मे गया। एक घर सू तासळी भरनै दूध लियो, दूजोड घर सू माग नाग नै खाड लावो ग्रर तीजोड़े घर सू दो च्यार टीपरिया गावो घो मायनें नखायो। पछै दूध मे आगळी हिलावता थका पाछा पावण कनै पूगा ग्रर मू घो मनवार करता बोल्या — लिरावो हुकम!

पावणो सकोच करतो बोल्यो —ग्ररे बाजीसा ग्रा तकलीफ ग्राप फिजूल देखी। म्हू नो कलवो करण रै हेवा ई कोनी।

बारठजी खरीका ग्रादमी हा, मा वै तासळी मे हाळै हाळ ग्रागळी हिलावता बोल्या—तकलोफ ता भाई सैणा देखो है हुकम! बाजीसा रै घर री तो फगत ग्रा आगळी है। इणनै हिलावण मे कोई खास तक्लीफ हुवै कोनी। इण वास्तै कोई चिता करण जिसी बात कोनी।



बारठजी वाली कोथली

एक बारठजी ऊंट फेरण रो धधो करता। ऊंट माथै अठी उठी भार पूळ लिजावता अर पोतारो गुजारो चलावता। एकर वै फिरता फिरता एक गाम मे पूगा। दिन आथमग्यो हो इण वास्त उठै ईज रानवासो लेवण रो विचार कियो। वै एक राजपूत र घरा पूगा।

बारठजी रै कनै आटै री एक कोथळी ही सा वा रोटी बणावण नै मायनै भेज दी अर कैवाय दियो कै इण आटै मे सू दो सोगरा उणरै वास्तै बणाय देवै। राजपूत रै घर मे काठो धाकलो आयोडो हो। अठै ताई कै सीदै रा ई जादा पडता हा। इण वास्तै राजपूत री बेटी सोगरा बणावती वखत खासो भलो आटो मायनै सू काढ नै राख लियो।

दो सोगरा अर बाकी र आटै समेत कोथळी पाछी बारठजी कनै पूगी तो बारठजी बात नै ताडग्या। उण वखत वो राजपूत ई बारठजी रै कनै ईज बैठो हो। कोथळी हाथ मे लिया बारठजी एक दूहो कह्यो—

कोथळी तू क्यू अणमणी,
क्यू थारो ढीलो गात ?
के थनै कुत्ता फफेडदी,
के लागा बाईजी रा हाथ ?

राजपूत ई बात नै समझग्यो। उण देख्यो कै बारठजी सगा मुल्क मे भाड नै बदनाम कर देवेला। इण वास्तै उण मठी उठी सू आटो लाय नै कोथळी पाछी पूरी भर नाखी।



पापड ताणी लावो साप

साळो अर बहनोई भेळा बैठा जीमता हा। साळो बहनोई सू मिळण नै आयोडो हो। खावण पीवण रो सगळो सामान क्नै ईज पडयो हो। बाता बाता मे बहनोई पापड परूसणो भूलग्या। साळै नै पापड खावण री मन म आई, पण मूडै सू किया कवै क म्हारै पापड खावणो है, इण वास्तै परूसो ! उण तरकीब सू बात उछेरी—बहनोई सा, दसेक दिना पैली म्हारै घरै एक साप निसरळयो—काळो भुजग ! लाबो इतरो क अठ सू लगाय नै ठेट उण पापड ताई !

बहनोई झट पापड परूस दियो।



सूवां, नै सूवां ई नी

एक चोर कोई सेठ रै अठै घणै दिना सूं चोरी करणी चावतो। उण नै इण बात रो पतो नी लाग्यो कै सेठ रात रा सूवै कठै है ? घर मे सूवै है कै दुकान माथै सूवै है ? वो चीज वस्त मोल लेवण रो मिस करनै एक दिन सेठा कनै गयो अर पूछण लागो—सेठा आप सूवो कठै हो ? कदेई रात बिरात कोई चीज वस्त री जरूरत पड जावै तो आपनै कठै सोधता फिरा ? सेठ ई उणरै माथै ऊपरला हा। वै उणरो उणियारो देख नै बात ताडग्या। वै बोल्या—म्हारो सूवणो काई रे भाई ! म्है सूवा हाटा मे, सूवा वाटा में, सूवा नोहरा मे, सूवा घर मे अर सूवां, नै सूवा ई नी। चोर चुपचाप रवानै व्हैग्यो।



चालबाज मंगतो

एक मगतो रोज आधो बण नै सड़क रै किनारै बैठ जावतो अर आवतै-जावतै नै रूडी आसीसा देय नै भीख मागतो। एक आदमी रोज उण मारग सूं दफ्तर जावतो। वो उण नै गरीब आधो समझ नै उणरै आगै पड़यै कटोरै मे पैसा गेरबो करतो।

पण थोड़ाक दिन पछै उण आदमी देख्यो क सागण वो ईज मगतो एक दूजी सड़क माथै पागळो बण नै बैठ्यो भीख मागै हो। उणनै आ देखर घणो अचूभो व्हियो। उण मगतै नै पूछ्यो—काई रे इतरै दिन तो तू सफा आधो हो अर अबै सफा सूझतो किया व्हैग्यो ?

मगतो बोल्यो—दाता, आधो बणवा सूं एक मोटो नुकसाण हो। लोग बाग कटोरै मे खोटा पैसा गेर जाता। इण वास्तै सूझतो व्हैणो पड़यो।



अठीनै क्यूं वली

एकर एक चोधरी री मा मरगी। चोधरी मा रै लारै चोखो कारज कियो अर एक बामण नै डोकरी रा फूल लेय नै हरद्वार भेज्यो।

बामण देवता रो सासरो हरद्वार रै मारग मे ईज हो सो देवताजी तो सासरै मे जाय नै जमग्या। पाच-सात दिना ताई खूब माल मलीदा खाया अर मोज कीवी। डोकरी रा फूल वनै हा सो लिजाय न सासरै गै नाडी मे ठरकाय दिया। इण भात बामण देवता पाछा आयग्या अर बात पण आई गई व्हैगी।

एक दिन बामण देवता रो राम निकळग्यो सो आ बात गाम मे कोई आदमी नै कैय दो। उण आदमी लिजाय नै चोधरी न पोय दी। बात सुणर चोधरी नै घणी रीस आई। उण बामण देवता नै बुलाय नै कह्यो—रात सुपनै मे म्हारी मा आई ही। उण मनै कह्यो के आप उणरा फूल हरद्वार गगाजी मे नी घाल न मारग मे इज एक नाडो मे ठरकाय दिया। इण कारण उणन हाल ताई मुगतो कोनो मिळो।

बामण देवता रीसा बळता बोल्या—मुगतीज चावै ही तो अठीनै पाछी काई लेवण नै वळी ? उठै सू तो हरद्वार नैडो पडता हो। उणन उठीन ईज जावणो हो। डोकरी सफा मूरख ईज दीसै।

सागरै तो वाई रै देहरै

पळी रै एक आदमी री बेटी साचोरी मे नीएड काठ परणायोडी ही । एकर वो उण सू मिळण नै गयो । राखी पूनम नडी आयोडी ही सो घर मे सेवा बण्योडी ही । सझ्या रा वो जीमण नै बैठो तो उणरै भाणै मे ई मीठी सेवा परूसी । की तो अधारो हो अर की थळियै सगळी उमर खेजडी री सागरिया ईज खाई ही, इण वास्तै सेवा नै उण सागरिया समझली । मीठी मवा खावण मे घणी स्वाद लागो—वो उणा रा वखाण करतो बोल्यो—ए ..है—है सागरै तो घणै ई दीठै, घणै ई खाधै, पण सागर तो वाई रै देहरै ! भलै भलै भलै ! वाह रे सागरै वाह !

बाप री बात सुण नै बेटी सरम सू दोवडी व्हैगी ।



पेट मे लोटो

रामद्वारै मे एक बाबाजी अर बारो चेलो रैवतो। बाबोजी जीव रा काठा घणा हा। घणाई कजूस। एक एक पाई नै दाता सू पकड़ता। मठै ताई कै मिंदर मे लाग्योड़ै भोग न ई वेच नै पैसा घड़ लेवता।

चेल रो सुभाव बाबाजी सू सफा उल्टो हो। वो सुभाव रो खाऊ लग्गू अर लापरवाह हो। रामद्वारै मे पीतळ रो टणको लोटो हा। चेलो उणन लेय न अठी-उठी जायबो करतो। एक दिन वो लोटो लेय नै तळाव माथै गयो। उठै भाग बूटी घोटी अर टोली दै जिसा टकारगा रंडिया जमाया। नसै री टर म वो लोटो उठ ईज भूलग्या।

दो तीन दिना पछ चेलै बाबाजी नै कह्यो—गुरुजी लोटा तो कठै ई गुमग्यो दीस। बाबोजी उणरी लापरवाही नै आछी तरिया जाणै हा। उणा ठीमरपणै सू पडुत्तर दियो—लोटा गुम ग्यो तो की बात कोनी बेटा, लोटो तो पेट म सू निकळैला।

चेलै पूछ्यो—पेट मे सू लोटो किया निकळैला गुरु-देव ?

आगै कह्यो—आपा दो यू जणा नै फगत दो दिन उपवास करणो पड़ैला बेटा, पछै लोटो तो मतै ई आय जावला। बात सुण नै चेल रो मूडो उतरग्यो।



सिवजी वालो सख

एकर सिवजी महाराज ससार माथै कोप कियो सो पीनारो मख बजावणो बद कर दियो। सिवजी रो सख बाज्या बिना बरसात होवै नी, सो ससार मे काळ पड़ग्यो। मानखो अन बिना अर दूजो जीवा जूण पाणी बिना पटापट मरण लागी।

उणीज वखत सिवजी पारबती रै सागै फिरता फिरता मिरत लोक मे आया। उणा मारग मे देख्यो कै ठोड ठोड मिनख मरयोडा पड़या है अर जिनावरा रो तो पार ई कोनी। ठोड ठोड हाडका रा ढेम लाग्योडा हा।

पण एक ठोड आग आय नै देख तो एक करसो सफा सूखी धरती मे हळ खडतो निगै आयो। सकर-पारबती दोनू जणा न घणो अचू भो व्हियो। वै उण करसै रै कनै जाय न बोल्या—अरे भला, तू था अणूती मेणत क्यू करै है ? इण सफा सूखी धरती मे काई निपजला ?

करसै हळ खडता खडता पडुत्तर दियो—मनै निपज री अगाई फिकर नी है। मनै तो फिकर आ है कै म्हू कठ ई हळ

खडणो पातरीज नी जावू । बस फगत इण कारण ईज हळ खड्डू हू ।

करसै रो जवाव सुण नै भोळानाथ गतागम मे पजग्या । वै सोचण लाग्या के म्हूं ई कठई सख बजावणो नी पातर जाऊ । अर उणा सख बजावणो सरू कर दियो । सख बाजता ई मेह बरसण लाग्यो । सगळो ससार निहाल व्हैग्यो ।



चोखी तरकीब

स्काउट मास्टरजी स्काउटिंग री क्लास लेवै हा कै प्राथमिक सहायता री पाठ पढावता उणा एक सवाल पूछ्यो—एक नैनो टाबर रमतो रमतो ताळै री कूची गिट जावै तो बोलो, थे काई करोला ?

सगळा ई एक दूजै रै मूडै कानी देखण लाग्या । छेवट रमेस उतावळो होय नै बोल्यो—म्हू बारी मे सू कूद नै घर मे चल्यो जाऊगा ।



जूनो फोटू

एकर एक स्कूल में आखी क्लास रो ग्रुप फोटू खची जियो। फोटू री कापिया त्यार होय न स्कूल में आई तो मास्टरणी क्लास नै फोटू री कापिया मोल लेवण खातर समझावण लागी—बडा होवर जद थे इण फोटू न देखाला तो याद करोला—ओ गट्टू है, आज जज बणग्यो है, ओ लादू है, आज सेक्रेटरी बणग्यो है, ओ रामू है जिको आज डॉक्टर है, आ मोहिनी है, आज एम एल ए बणगी है। सोचो कितरो मजो आवला!

लारली बैंच माथै क्लास रो सैं सू बदमास छोरो बैठो हो। वो फोटू में मास्टरणी री तस्वीर कानी इसारो करतो बोल्यो—आ म्हारी मास्टरणी ही, जिकी बापडी मरगी।



अरज ऊंधी सुणी

एकर एक भाबी उन्हाळै रो गामतरै मार्थ गयो। जेठ महीनै रो भोट तावडो अर दाझाळा देवती बळ-बळती लू। भाबी खाशो विलखो व्हैग्यो। चालतो चालतो मन में झूवण लाग्यो—हे रणूचे रा राव! धवळी धजा रा धणी! अबार एक घोडो भेज दैतो किसोक नामी काम वणै! झट टाग वाळ नै माथै चढ जाऊ अर वरगडा बरगडा करतो आगलै गाम पूग जाऊ।

यू मन रा लाडू खावता खावता भाबी मो एक पावडा आगै गयो कै मारग रै सै बीच झाडकै री छिया में एक ठाकर घोडी लिया ऊभा। घोडी अबार ईज ठाण दियो हो सो बछेरियो कनै ईज पड्यो हो। ठाकर तो वाट ईज जोवै हा कै कोई बछेरियो ऊचावण जोग मारगू आय जावै तो काम बण जावै।

भाबी नै देख नै ठाकर मन मे घणा राजी व्हिया। वै बोल्या—तू ठीक आयो भाया। लै, इण बछेरियै नै ऊचाय नै थोडो आगलै गाम ताई पुगाय दै। घोडी मारग मे इज ठाण दे दियो अर म्हू एकलो हो सा चिंता मे पडग्यो। तू आयग्यो, अबै की सोच नी।

भावी बछेरियै नै खाधै माथै ऊचाय नै चालतो चालतो मन मे विचार करण लाग्यो—म्हारै धणी रामसा पीर अरज सुणी तो खरी पण ऊधी सुणी। घोडो मांग्यो तो चढण नै हो, पण दे दियो ऊचावण नै। डोकरो कोई काम मे उळझ्योडो व्हैला। पण खैर, की कोनी, अरज ऊधी-साधरी सुणी तो खरी।



मनोवैज्ञानिक इलाज

दिमाग रो इलाज पूरो व्हियां पछै मनोवैज्ञानिक डॉक्टर मरीज नै कह्यो—मनै खुसी है कै आप ठीक व्हैग्या हो। अब आप घरां जाय सको हो।

मरीज बोल्यो—म्हारी बैन नै ई आपरै कनै भरती करावणी है। उणरी बिमारी इण बात है कै वा सोचै कै वा मुरगी है।

—तो उण नै पैलीज क्यू नी लियाया? अबार ताई तो वा थार सागै री सागै ठीक व्है जाती। डॉक्टर कह्यो।

मरीज बोल्यो पण साची बात आ है डॉक्टर साब, कै म्हानै अंडां री जरूरत ही।



एक कोस रो गबीड

एकर एक भील अर भीलडी कोई दूजै गाम जावता हा। असैंधो मारग अर उन्हाळ री रुत। चालता-चालता दोयू जणा नै काठा थाकेलो आयग्यो। पण छेवट तो ठायै पूगा छूटको हो। इण वास्तै ज्यू त्यू करनै पग ठिरडता वै वूआ जावता हा। थोडाक आगै गया एक मारगू वानै साम्हो धकियो। भीलडी उतावळी होय नै उणनै पूछण लागी—बापसी, ओ आगलो गाम अठै सू कितरोक आगो है?

मारगू बोल्यो—च्यारेक कोस।

भील नै भीलडी रै सवाल-जवाब माथै रीस आई। वो मन मे कैवण लाग्यो—इणसू चुपचाप तो चालीजै कोनीं अर हर आवतै जावतै नै की नै की पूछनीज रैवैला।

थोडाक आगै गया एक दूजो मारगू फेरू वानै साम्हो धकियो। भीलडी उणनै फेरू वो रो वो सवाल पूछ्यो—बापसी, वो आगलो गाम अठै सू कितरोक ळेटो व्हैला?

मारगू बोल्यो—पाचेक कोस।

भीड़ नैं अबकाळै अणूती रीस आई। वो बोल्यो–लै राड गवीड एक कोस रो। च्यार कोस रा पाच कोस व्हैग्या। थारै बाप नैं नी पूछ्यो व्हैतो तो एक कोस तो नी वधतो। अब फेरू पूछजै कोई नैं ! भीलड़ी बापड़ी काई पडुत्तर देवती ! चुपचाप चालण लागी।



तनैं कुण बणायो ?

तीन च्यार टाबरिया बैठा पोत-पोतारै जनम री बातां कर हा। एक जणो बोल्यो–म्हूं तो अस्पताळ सूं आयो। दूजोड़ो बोल्यो–मनै डाक्टर देयग्यो। तीजै बतायो–मनैं तो कोई चील ह्यात माथै गेरगी। चोथोडो चुपचाप बैठो हो। उणनैं यूं बैठो देख नै सगळाई पूछण लाग्या–तू बोलै क्यूं नी रे, तुनै कुण बणायो ?

वो छोरो होळै सीक बोल्यो—म्हारा मा-बाप तो गरीब है सो मनैं तो घर मे ईज बणाय लियो।



गामठी री चतुराई

एकर एक गामठी आदमी कोई मोटै सहर मे पूगो। उठै उण एक डीगी सतखडी हवेली देखी तो आख्या फाड फाड नै उणनै निरखण लाग्यो। इतरैक मे एक गुडो उठीनै सू फिरतो-फिरतो निकळचो। उण, उणनै आख्या फाडर हवेली निरखता देख्यो तो वो उणरै कनै आयो अर उणरै लाधै माथै हाथ धरनै बोल्यो—काई करै रे भाया ?

—हवेली देखू हू।

—किसो खड देखै है ?

—तीजो खड देखू।

—तो निकाळ तीन रुपिया।

—क्यू ?

—क्यू काई, आ सरकारी इमारत है। इणनै देखण रो ई टैक्स लागै। एक खड देखै तो एक रुपियो दो खड देखै तो दो रुपिया अर तीन खड देखै तो तीन रुपिया।

उण तीन रुपिया काढ नै गुडै नै दे दिया। गुडै उठै सू तेतीसा मनाया।

गामठी आदमी मन मे राजी होय नै कैवण लाग्यो—लोग-बाग कैवै कै सहर रा मिनख हुस्यार होवै, इणनै तो म्हैं ई बोको बणाय दियो। म्हू देखै तो ठेट सातमो खड हो अर रुपिया इणनै तीन ईज दिया।



अंधारै मे देख्यो कोनी

पावणा रै वास्तै लायोडी मिठाई मे सू दो लाडू बचग्या। मा उण लडूवा नै लेय नै कोठै मे धर दिया। उमा रो भाई पप्पू चाटोकडो हो, उण वै लाडू धरता देख लिया हा। दिनूगै उणरी मा कोठो खोल्यो तो दो री ठौड एक लाडू मायनै मिळ्यो। वा समझगी के ऐ काम पप्पू रा है। उण पप्पू नै बुलाय न पूछ्यो— पप्पू कालै म्है कोठै मे दो लाडू राख्या हा अर आज एक ईज किया है? पप्पू घबरीज्योडो बोल्यो—मम्मी अधारो हो सो म्हैं श्रो लाडू देख्यो कोनी।



चोरा नै जोकारो

एकर एक पुलिस थाणैदार दो चोरा नै पकड नै अदालत मे हाजर किया। अदालत उण चोरा रा नाम पूछ्या तो थाणैदार बतायो—बेनरजी अर चेटरजी।

जज रीसा बळतो बोल्यो—हरामखोर चारिया रा धधा करै अर नाम रै आगै जी लगाव। लिखो मुंसीजी इणारा नाम— बेनर अर चेटर।



नेता रो स्वागत

सुनार रो बेटो ओळ मे बैठो गहणो घडतो हो अर उणरो बाप मायनै बैठो रोटी जीमतो हो। जितरैक तो चुणाव री मौसम होवण सूं एक नेताजी पोतारै चमचा सागै वोट मागण नैं आया।

सुनार माय नै बैठै की खडवडाट सुण्यो तो छोरै नैं पूछ्यो—काई बात है रे फूलिया ?

छोरो हथौडो कूटतो बोल्यो—भाईजी नेता आया है, वोट मागै है।

सुनार की कम सुणतो। उण सुण्यो कै कुत्ता आया है, रोट मागे है। वो उतावळो होय नै बोल्यो—मचकावैनी रे हथौडै री सो पेही चढणो भूल जावै। सगळी ठौड भिस्टवाडो कर नाख्यो हरामखोरा।

बेटो पाछो जोर सूं बोल्यो—नेता आया है भाईजी, नेता।
सुनार पडुत्तर दियो—अरे सुण लियो क्यूं बवाळो करै है। म्हूं बोळो जरूर हूं पण बोफो कोनी हूं। एक बार कैय तो दियो कै कुत्ता नैं कूट नैं काढ दै अर जे थासूं नी निवळै तो ठैरजा म्हूं आवूं हूं अगार।

नेताजी देख्यो चोखो स्वागत व्हियो। अबै अठै सूं चालणा मे ईज सार है।

चोखी सलाह

एक एम० एल० ए० साब दूजी वार पाछो चुणाव लडण रो मतो कियो। वै पोतारै चुणाव प्रचार में निकळ्या। एक गाम में पूगा ता उठै सभा करनै भाषण करण लाग्या—भाईडा, पांच बरस तो राता करता वीतग्या। नी ठा ई कोनी पड्यो। म्हूं थारी पूरी सेवा करणी चावै हो पण कई कारणां सूं कर कोनी सक्यो। अबकाळै म्हूं थासूं पक्को वायदो करूं कै थारै गाम में एक अस्पताळ अर एक डाकघर जरूर खोलाय दूंला। उम्मीद करूं कै आप सगळा ई जणा मनै सेवा करण रो मोको जरूर दिरावोला।

सभा में एक भागळजीभा बैठो हो। वो हाथो होय नै बोल्या—एम० एल० ए० साब, मोको तो म्हे आपनै पूरै पांच बरसां रो दियो हो। पांच बरस थोड़ा कोनी व्है। इतरै बरसां में तो आप थारै ज्यूं ई कर सकै हा। पण म्हां तो आ सुणी है कै इतरै बरसां में ई आप पोतारै बगलो ई कोनी बणा सक्या तो पछै आप म्हारै अठै अस्पताळ अर डाकघर काई बणावोला? ऐ बधा तो कोई रातो मारग्या वाळा ईज कर सकै। आपरै बस रो ओ रोग कोनी। इण वास्तै म्हारी सलाह मानो तो अबै आप आराम ईज करावो।



जादूगर

पाच वरस रो पप्पू सझ्या रो स्कूल सू घरा आयो तो पोतारै बाप नै कंवण लाग्यो— पापा पापा ! आज म्हारै स्कूल मे एक इसो जादूगर आयो कै जिको काच रा टुकडा अर लोह री पत्तिया खायग्यो । थे कदेई इसो जादूगर देख्यो पापा ?

बाप बोल्यो—म्हैं तो कई जादूगर दीठा है बेटा । आपणै इण मुल्क मे जादूगरा री कमी कोनी । अठै तो एक सू एक आला जादूगर मौजूद है । यू तो काच रा टुकडा अर पत्तिया खावण री बात करै, पण अठै तो इसा इसा जादूगर है जिका थारै स्कूल री सगळी टाट-पट्टिया खाय जावै । मेज अर कुरसिया तक डकार जावै ।

—मेज नै कुरसिया ई खाय जावै ! अचूभै सू पप्पू री आख्या फाटीज रैयगी ।

—हा, हा बेटा ! बाप बोल्यो—मेज अर कुरसिया काई मोटी बात है ? बडा-बडा जादूगर तो ट्रका बद सिमेण्ट खाय जावै, बोगिया बद भाठा अरोग जावै अर मौको पडया पूरी सडक री सडक डकार जावै ।

—पापा ! मोटो व्हिया म्हू ई जादूगर बणू ला ।

—हा बेटा, तनै सडक खावणियो जादूगर बणावाला ।



फेमली रुलगी

एक ठाकर चुणाव म उभा व्हिया अर जीतग्या। एम० एल०ए० बणता ई जैंपुर रा चक्कर चालू व्हैग्या। एक पग गाम मे तो दूजोडो जैंपुर मे। ठाकर रै ठकराणी हर वखत मादी रैवती इण वास्त वे जैंपुर जावता तो ई वारो जीव तो घरै ईज भमतो।

दुकाळ रो बरस हो। ठोड-ठोड सडका बणती ही। गाम रा सगळा ई मिनख सडका माथै लाग्योडा हा। ठाकर काम खोलावण म अर मिनखा नै काम माथै लगावण मे पूरो रस लेवता।

एकर व जैंपुर जाय नै पाछा आया तो टेसण माथ उतरता ईज वारै गाम रा पचास माठेक आदमी, जिका सडक माथ काम करै हा, वानै मिळग्या। अर मिळता ईज बोल्या- ठाकर सा'ब रावळै तो जैंपुर पधारग्या अर लारै फेमली रुळगी।

—फेमली रुळगी ? ठाकर रै मन मे डबको पडग्यो।

—हा धणिया, रावळै तो जैंपुर बिराजता हा अर लारै फेमली अगाई रुळगी। मेट, ओवरसियर अर एक्सीअन सगळा ई मिळ नै तीन हपता रा पैसा खायग्या अर म्हानै अगूठो बताय दियो।

ठाकर बात नै समझग्या। बोल्या—आगा बळो रे डोफा, फेमली फेमली करनै म्हारो ता नमो ई उतार दियो। फेमिल वरक वयू नी बोलो पाधरो ई।



म्हूँ कुण हूँ ?

एक छोकरो क्लास मे उदास व्हियोडो मूंडो [illegible] बैठो हो। मास्टरजी उणनै पूछ्यो—गोपाल, काई बात है [illegible] ? आज यू अणमणो व्हियोडो किया बैठो है ?

गोपाल बोल्यो—म्हारै घरै म्हारो मा अर बापू रै [illegible] सरी मे लडाई व्हैगी, माट साब !

—तो इणमे अणमणो होवै जिसी [illegible] ? सगळै घरा मे यू ईज चालै। भेळा पडया तो [illegible]—मास्टरजी कह्यो।

—पण म्हारी मा नै [illegible] गयेडी है।

—तो काई व्हैग्यो [illegible] लडाई में किसा लाड [illegible] है ?

म्हूँ काई पहरूं ?

एक स्कूल मे तीन मास्टराणिया काम करै ही। स्कूल में छोरिया छोरिया रै मतै रमती अर वै तीनू जणिया बाता रा पटीडा पाडती अर मौज करती।

एक दिन उणा आपसरी मे तै कियो कै काले तीनू जणिया उणीज रग री साडिया पहर नै आवला जिण रग रा वार पति रा बाल है।

एक जणी बोली—म्हारै पति रै माथै रा बाल एकदम काळा भरग है, इण वास्तै म्हूं तो काले काळै रग री साडी पहर न आवू ली।

दूजोडी बोली—म्हारै उणा रा बाल तो सफा सफेद है, इण वास्तै म्हू काले सफेद रग री साडी पहर नै आवू ली।

तीजोडी मणमणी व्हियोडी ऊभी ही। उणनै दोन्यू जणिया पूछयो—काई बाई तू किसै रग री साडी पहरैला ? वा होळै-होळै बोली—काई बताव बाई, म्हारै तो उणा रै माथै मे बाल ई कोनी। म्हू अबै किसै रग री साडी पहरू ?

एक जणी हसती थकी बोली—बाल कोनी तो काई व्हैग्यो। माथै पर टाट तो है क ? इण वास्तै तू लाल रग री साडी पहर लीजै।



ईनाम

एकर एक स्कूल मे इन्स्पेक्टर साब मुआयनो करण नै गया। वै फिरता फिरता भूगोल री क्लास मे पूगा। क्लास मे मास्टरजी लडका नै स्काटलैंड बाबत की बतावै हा। इण वास्तै उणीज प्रसग मे इन्स्पेक्टर साब लडका नै पूछ्यो—बतावो देखू, स्काटलैंड री राजधानी रो नाम काई है?

सगळा ई लडका एक दूजै रै मूडै कानी देखण लाग्या। इन्स्पेक्टर साब नै बडो अचू भो व्हियो कै पूरी क्लास मे एक लडको ई स्काटलैंड री राजधानी रो नाम कोनी जाणै!

उणा कह्यो—जिको लडको स्काटलैंड री राजधानी रो नाम बतावैला, उणनै ईनाम दिया जावैला।

इणरै पछै एक एक करन सगळा ई लडका नै ऊभा किया। पण कोई पडुत्तर नी दे सक्यो। छेवट छेली बैच माथै बैठोडै एक तगडै सीक लडकै नै ऊभो कियो अर वो ईज सवाल पूछ्यो। लडको नीचो माथो करन होळै सीक बोल्यो—मन क येरा।

जवाब सुणता ई इन्स्पेक्टर साब खुस व्हैग्या अर माथो हिलावता बोल्या—यस यस ऐडिनबरा ऐडिनबरा! सिट डाउन सिट डाउन! अर उण ठोट लडकै नै ईनाम मिळग्यो।

जै गोपाल जै गोपाल

इंस्पेक्टर साब उण स्कूल सू रवाने होय नै कोई दूजी स्कूल मे पूगा। एक क्लास मे हिन्दी पढावणिया मास्टरजी लडका नै राम कथा मे धनुस तोडण रो प्रसग पढावै हा। इंस्पेक्टर साब रै उण क्लास मे वळता ई मास्टरजी फुरती सू आगली बैंच माथै बठोडै एक लडकै नै पूछ्यो—बता सिवजी रो धनुस कुण तोड्यो ?

सवाल सुणता ई लडको घबरीजग्यो। मास्टरजी उण कानी करडी निजर सू देख्यो तो वो रोवण लागग्यो। वो रोवता-रोवता बोल्यो—माट साब, म्हैं तो धनुस नी तोड्यो। म्हारै बाप री सौगंध, म्हैं तो धनुस दीठो ई कोनी।

मास्टरजी नै अणूती रीस आई। उणा उणनै बैंच माथै ऊभो कर दियो। लडकै नै रोवतो देख नै इंस्पेक्टर साब नै दया आयगी। उणा मास्टरजी नै कह्यो—ओ लडको कैवै कै उण धनुस नी तोड्यो तो पछै आप इणनै बैंच माथै ऊभो क्यू कर दियो ?

इतरैक मे हेडमास्टरजी उठीनै पधारग्या। उणा सगळी

बात सुण नै लडकै नै पुचकारता थका कह्यो —अरे रोवै क्यू है रे खूटोडा ! धनुम टूटग्यो तो गयो म्हारै बाप सागै। स्कूल रै एक्टी वीटी फड मे सू दूजो बणाय दाला। इण मे रोवण री काई बात है ?

मास्टरजी माथो कूटता मन मे कह्यो — व्हैग्यो इमै मह कमै री कल्याण ! ज गोपाळै जै गोपाळ !



छुट्टी रो दिन

स्कूल मे बैठया दो टाबरिया बाता करै हा। एक जणै दूजोडै नै पूछ्यो—तू कद जनम्यो हो ?

वो बोल्यो—रविवार नै।

पेलडै कह्यो—हट भूठला ! भ्रो किया व्है सकै ? रविवार नै तो छुट्टी रेवै।



अंग्रेजी मे पडुत्तर

एक बगलै री रुखाळी खातर एक कुत्तो पाळयोडो हो। कुत्तो खाणको व्हियोडो हो सो असैधै मिनख नै तो मायन वडना ई पकड लेवतो। मालिक कुत्त री इण आदत सू हैरान व्हियोडो हो इण वास्तै दिन री वखत उणनै बाध नै राखतो।

एक दिन दुपैर री वखत बाई मिळण वाळो आयो अर सजोग री बात कै भूल सू कुत्तो उण दिन छूटो ईज हो। इण वास्तै फाटक रै मायनै वळना पाण भूसतो थको वो उणरी पीडी पकडणनै तासकियो। आवण वाळो की सावचेत हो, इण वास्तै भीत माथै चढग्यो। नी तो सागैडो स्वागत व्है जातो।

कुत्तै नै भुसतो सुण नै बगलै रा मालिक बारै आयो अर मेहमान नै भीत माथै ऊभो देखनै हसतो थको बोल्यो—कुत्तै आप नै अग्रजी मे सवाल पूछ्या अर आप की पडुत्तर कोनी दिया, इण वास्तै आपनै भीत माथै चढणा पड्यो।

मेहमान अचूभै सू बोल्यो—कुत्ता अर अग्रेजी ? आ काकर ?

घर-धणी कह्यो—कुत्ते आवता ई आपनै पूछयो—who ? who ? (हू ? हू ?) पण आप की समझ्या कोनी । पछै इण पूछयो—How ? How ? (हाऊ ? हाऊ ?) तोई आप की उथलो नी दियो । जे आप पाछो अंग्रेजी में पडुत्तर दे देवता तो आपनै भींत माथै नी चढणो पडतो । खैर, अबै नीचा पधार जाओ ।



दान री कीमत

एक दानी आदमी सडक माथै जूता रा कस्सा बेचण वाळै छोकरै नै मदद देवण री नीयत सू बिना कस्सा लिया ई रोजीना दस पैसा झिलाय देवतो । एक दिन जद वो दस पैसा झिलाय नै आगै बध्यो तो फेरी वाळै छोकरै लारै दोड नै उणरो हाथ पकड लियो ।

दानी आदमी बोल्यो—कोई बात कोनी, म्हनै कस्सा री जरूरत कोनी । म्हू तो यू ही पैसा देवू हू ।

—पण हजूर ! छोकरो बोल्यो—आज सू कस्सा री कीमत पनरै पैसा व्हैगी है ।



स्याणी छोरी

मिठाई री दुकान माथै एक स्याणी सी छोरी बैठी मिठाई बेचै ही। जितरै ता एक गिराक पोतारी नैना छोरी सागै उठै आयो। उण कह्यो—देख बेटी दुकान माथै बैठी छोरी कितरी स्याणी अर मोयणी है। मिठाइया रा थाळ रा थाळ उणरै मूडागै भरया पड्या है, पण मजाल है एक टुकडो ई उठाय नै मूडै म घाल ले। अबार इणरी ठौड तनै मिठाई होवै तो तू थू रैय सकै ?

इणरै पछै उण गिराक दुकान वाळी छोरी नै लाड सू पूछयो—क्यू ए बाई, इतरी मिठाइया थारै मूडागै पडी है, तनै खावण री मन मे कानी आवै काई ।

छोरी बोली— खायनै काई करू ? अठै तो इतरी जिनसा है कै वानै चाटता चाटता ई म्हारो तो पेट भरीज जावै ।



बोलै कुण है

डॉक्टर कपूर दिन भर रो कायो हियोडो सङ्या रा घरा पूगो नो भाग पी, कळाकद खाय नैं पोतारो बिस्तर सभाळयो। थोडी क देर मे टेलीफोन री घटी वाजी। बिस्तर मे पडया-पडया ई डॉक्टर पोतारी लुगाई नैं कह्या—बोरा दे कै म्हू बारै गयोडो हू। पण कोई अणू नो सीरियस केस हुवै तो म्हू कैवू ज्यू बोल दीजै।

बातचीत करण सू जाण पडी कै केस साच्याणी सीरियस हो। इण कारण डॉक्टर धीरै धीरै बोलतो गयो अर वारी लुगाई फोन माथै बतावती गई। सगळी हिदायता सुण्या पछै फोन कर-णियो कह्यो—धनवाद मिसेज कपूर आपनै। पण एक बात पूछू कै जिको आदमी आपरै सागै बिस्तरै माथै उठो बोलै है, वो डॉक्टरी पाम तो है कै नी ?



नौकरी मे खललल !

राजपूतानै मे देसी रियासतां रै वखत री बात है। उण वखत रियासतां मे पढाई रो सिलसिलो की कमती हो इण कारण रियासतां मे बारलै प्रांतां रा लोग आय आय नै नौकरियां म भरीज जावता। इणनै रोकण रै वास्तै एक रियासत तै कर लियो कै रियासत री सरकारी नौकरी मे फगत उठै रा मूळ वासिंदा नै ईज लिया जावैला।

इण वास्तै भरती करती वखत इण बात री पूरी जाच पडताळ व्हैती कै उम्मीदवार कठैई बारलै प्रांत रो तो नी है। उण नै भांत भांत रा सवाल पूछ्या जावता अर इणरै सागै उणनै एक वाक्य बोलण रो कह्यो जावतो—बोलो देखाणी व्हाळो वर्ये खळळळ ! खळळळ ! खळळळ ! असली उम्मीदवार जिको राजपूतान री रियासत रो वासिंदो व्हैतो वो तो ठीक उच्चारण कर देवतो। पण नकली उम्मीदवार बोलतो—वाल्हो वैवे खललल ! खललल ! खललल !

अर इंटरव्यू लेवणियो अफसर उणन कैवतो—तो भाया थारी नौकरी मे ई खललल ! खललल ! खललल !



हिम्मत री कीमत

एकर एक लुगाई पाणी भरण नै तळाव माथै गई अर पग चीकलवा सू तळाव रै मायनै पडगी। तळाव रै तीर माथै ऊभी भीड मे सू एक आदमी तुरत गठो लगायो नै उणनै बारै काढ दी।

बात फूटता ई तळाव री पाळ माथै मेळो मचग्यो। सगळा ई उण आदमी री तारीफ करण लाग्या। कैवण लाग्या—वाह रे वाह! मरद हुव तो इसो हुव। नी तो बापडी आ लुगाई तो आज मर जावती।

इतरै क मे वो आदमी पोतारा कपडा निचोय नै रीस मे तगेळ िह्योडो उठै आयो अर कैवण लाग्यो—कुण है वो नालायक हरामखोर, जिण मनै तळाव मे धक्को दियो ? म्हू उणरो लोही पी जाऊला।



फेरा-फेरी सू ई गई ?

एक डोकरी रै चोरी करण रो सुभाव हो। वा अठै कठै ई जावती, श्रांख टाळो करनै नैनी मोटी चीज मटाय लेवती। उणर दो मोट्यार बेटा अर सै सू बडी परणायोडी एक बेटी ही। बेटा उणनै समभ्फायबो करता पण डोकरी पोनारी आदत सू लाचार ही। छेवट बेटा ई तितना छोड दी। उणा मन नै समभ्फाय लियो कै इणनै की कंवणो फिजूल है। कारण कै पड्या ज्यारा सुभाव, वै जासी जीव सू।

एकर डोकरी री बेटी रै घरा ब्याव मड्यो सो डोकरी रा बेटा बाई रै माहेरो लेयनै जावण रो मतो किया। डोकरी बोली कै म्हू सागै चालूला। बेटा बोल्या—सागै चालण मे तो कोई बात कोनी, पण थारो सुभाव है खराब अर आदत सू तू है लाचार, सो कठै ई गिनायता मे स्यान गुमावैला।

डोकरी बोली—म्हू इसी गेली थोडी ई हू, जो घर री स्यान गुमावू ला। बेटा उणनै साथ लेयग्या। पाच सात दिन उठै रह्या अर ब्याव रो काम निवड्या मा न सागै लेयनै पाछा घरा आया।

छोटोडो बेटो ऊठ माथै सू बोरी उतारण लाग्यो तो मायनै सू पाच दसेक थेपड़िया निकळी । वो तुरत समझग्यो कै ऐ काम उणरी मा रा है। टो यू बेटा छोकरी नै लडण लाग्या तो वा रीसा बळती बोली—थे चोरी करण रो ना दियो हो । म्हू चोरी करण मू रही तो काई फेरा फेरी सू ई गई ?



सावल लगाय दूं

गामठी आदमी रो छोकरो सहर देखण नै गया । उठै वो मोटर गी चपेट मे आयग्या जिण सू उणरै थोडी घणी लागगी । वो घरा पूगो तो उणरै बाप उणन सगळो हुकीकत पूछी अर पछे सहर मे रवणियै एक वकील न कागद लिख्यो—कालै आपर सहर मे ५३७२ नबर री मोटर म्हारै छोरै रै थोडी लगाय दी है । आप किरपा करनै निग कराईजो कै मोटर रो मालिक कुण है ' जे कोई मालदार आसामी हुवै तो म्हू छोरै रै थोडी सावळ लगाय दू । मुकदमो आपनै ईज लडणो है, सो की कम दीखै तो विगतवार समाचार लिखजो ।



परदेसी अर कूंजडो

एकर एक परदेसी फिरतो-फिरतो बजार में गयो। उठै एक कूंजडो बैठ्यो साग भाजी अर फळ फूल वेचै हो। परदेसी एक फळ कानी आगळी करता कूंजडै नै पूछ्यो—ओ काई है रे?

—आ सेव है साब! कूंजडै जवाब दियो।

—सेव? इत्ती सीक? म्हारै उठै तो इतरी मोटी मोटी सेवा हुवै।

—अर ओ काई है? परदेसी फेरूं पूछ्यो।

—ओ? ओ चीकू है साब! कूंजडै कह्यो।

—चीकू? ओ चीकू? म्हारै उठै तो चीकू इतरा मोटा मोटा हुवै। परदेसी बोल्यो।

—अर ओ काई है? परदेसी फेरूं पूछ्यो।

—ओ केळो है। कूंजडै लापरवाही सूं कह्यो।

—अरे, ओ केळा? म्हारै उठै तो केळा इतरा मोटा मोटा हुवै।

कूंजडो समझग्यो कै लेणो करणो तो की है कोनी अर यूं ई फालतू भिकाळ करै। गप्पीश्यास पोतारै उठै री हरेक चीज नै मोटी बतावै अर आपणी चीज नैंन नी बतावै।

अबकी बार परदेसी एक टणक मतीरै कानी इसारो करतो बोल्यो—आ काई है?

—ओ अंगूर है। कूंजडो रीसा बळतो बोल्यो। परदेसी चुपचाप रवाना व्हैग्यो।



पोलिंग अफसर

चुणाव रो मौसम हो सो पोलिंग अफसर एक पोलिंग टेसण माथै चुणाव करावै हो। कमरै मे भीड खासी ही अर बारै ई लाबी लैण लाग्योडी ही। सगळो पोलिंग रो काम ढगसर चालतो हो। इतरै क तो एक लुगाई लैण तोड नै बारै निकळी अर सगळा सू आगै आय नै वोट नाखण री कोसिस करण लागी। पोलिंग अफसर उणनै धुरकार दी। इण माथै वा रीसा बळ नै वोट पोलिंग अफसर री मेज माथै पटक्ता कैवण लागी—श्रो बळियो थारो वोट, म्हारै भावै भलैई चूल्है मे नाख दीजो। अजे तो पोलिंग अफसर बणन बैठा हो, देख लिया। सझ्या रा रोटी जीमण नै घरा पधार जाईजो। वा उण पोलिंग अफसर री लुगाई ही।



वतल

रेलगाडी रै डिब्बै मे बैठ्या सगळा ई मुसाफरा नै आपसरी मे बातचीत करता देख नै आम्ही साम्ही बैठ्या दो आदमी पण आपस मे वतळ सरू कीवी —

—आप कठै बिराजो ?

—जैपुर ।

—जैपुर तो म्हूं ई रैवू ।

—म्हू बनीपारक मे रैवू ।

—म्हारै सी टाईप रो मकान है ।

—सी टाईप रो मकान म्हारै पण है ।

—म्हारै मकान रा नबर ८५४ है ।

—म्हारै बगलै रा नबर ई ८५४ है । आगती पागती बैठ्या लोग घणै चाव सू वारी बाता सुणै हा । एक जणै अचरज सू कह्यो — वाह साब कमाल है । आप दो यू जणा एक ई सहर, एक ई गळी अर एकीज नबर रै मकान मे रैवो पण एक-दूजै न पिछाणो ई कोनी !

उणा जवाब दियो — पिछाणा क्यू कोनी ? म्हे तो बाप बेटा हा । टाईम पास करण खातर वतळ करै हा । डिब्बै मे जद सगळा ई एक दूजै सागै बाता मे लाग्योडा हा तो म्हे गूगा गूगा क्यू बैठता ?



मम्मी दे देसी

दुपैर री वेळा ही कै घर मे कोई पावणा आया। पांच बरस री ऊमा नै उणरी मा पोनारै कनै बुलाई अर कह्यो— सामलै हलवाई काकै रै अठै सू आधो किलो मिठाई लेय नै आव, बेटी।

ऊमा बोली—मिठाई रा पैसा मम्मी ?

मा कह्यो—तू कैय दीज कै म्हारी मम्मी आय नै दे देला।

ऊमा दौडती दौडती गई अर हलवाई काकै कनै मिठाई तोलाय ली। रवाना होवण लागी तो पसा याद आया, बोली— काका मिठाई रा पैसा कितरा ? हलवाई ऊमा रो लाड राखतो सो बोल्यो—एक चुम्मी !

—तो मम्मी आय नै दे देसी ! ऊमा कह्यो अर दौडती-दौडती घरा जाय नै पावणा रै मूंडागै ईज मा नै सगळी हकीकत सुणाय दी।



ठडी चाय

एक छोकरो हकलीजतो हो, इण कारण वो अटक अटक नै बोलतो। जिण वखत कोई मेहमान आयोडो व्हैतो अर वो इण ढग सू बोलतो उण वखत उणरै बाप नै घणी रीस आवती। एक दिन इसो ईज सजोग बणग्यो। उणरो बाप कोई मेहमान साग बारली बठक म बैठ्यो हो कै वो मायनै सू आयो अर कैवण लाग्यो पा पा ! पा ..पा ! च...च .चाय.. ठ ठ ठडी व्हैरी है घर म म म मम्मी ग ग.. ग ..गरम व्हैरी है आ...आ .. आप ..म म ..म मायनै पधारो। बाप रीसा बळतो बोल्यो—यू अँक लगा लगा नै क्यू बोलै रै बेवकूफ !

मेहमान हसतै थकै कह्यो—इण वास्तै क कठैई एक्सीडेंट नी व्है जावै।



मुलजिम अर वकील

एक मुलजिम अदालत मे बयान देवै हो । विरोधी पख रो वकील उणनै सवाल पूछ पूछ नै हैरान कर दियो । छता पण वो हिम्मत सागै सवाला रा जवाब देवतो गयो । वकील उणनै पूछ्यो—थै कदैई ब्याव कियो ?

—हा हजूर एकर कियो ।

—किणरै सागै कियो ?

—एक लुगाई रै सागै कियो ।

—कठै ई सुण्यो है कै ब्याव आदमी सागै व्हिया करै ?

—क्यू नी हुवै हजूर, म्हारी बैन रो ब्याव एक आदमी सागै ईज हुयो है ।



मरीज री मुसीबत

पेट रो आपरेसन कराया पछै एक मरीज पोतारै कमर म सूतो हो। उणरै कनै निरा ई मिळण वाळा बैठया हा। वै डाक्टरा री भूलां माथै बाता करण लाग्या। एक जणै बतायो कै एकर एक डाक्टर पेट रो आपरेशन करती वखत पोतारो चाकू मरीज रै पट मे ईज राख दियो। काम निवडया सू मगळी ठोड सोध्यो पण कठै ई पतो नी लाग्यो। छेवट पेट रा टाका पाछा खोल्या तो चाकू मायन मिळायो। दूजोड़ै बनायो कै इणीज भात एक डाक्टर री भूल सू म ची मरीज रै पेट मे रैयगी ही। तीजै बनायो कै एकर चिमटो मायनै रैयगी सुणी ही।

इतरक मे आपरेसन करण वाळो डाक्टर उठै आयो अर कैवण लाग्यो—म्हारो हेट नी लाध रह्यो है, आप मे सू किण ई दह्यो तो कोनी ?

आ बात सुणता पाण मरीज तो बेहोस व्हैग्या।

डाक्टर नै बडो अचू भो व्हियो। उण कनै बैठया लोगा न पूछयो—आप इणनै की खावण-पीवण न तो नी दे दियो। लोगा ना देवता सगळी हकीकत बताय दी।

डाक्टर हस हस नै दालडा व्हैग्यो।



जै सीताराम कहसी

लादडै गाम रो रैवासी एक सत रोज बस्ती मे आटो मागण न जावतो। घर-घर जाय नै 'सीताराम!' कहतो अर चिमटी-चिमटी करता ई आटै री चरी खबोड नै घरा आवतो।

लादडे रे ठाकर रे रावळै मे काठो थाकैलो आयोडो हो। हालत अठै ताई व्हैगी कै माफ-सवार रा ई जादा पडण लाग्या। एक दिन सत आटो मागतो-मागतो रावळै मे पूगो। उण दिन रावळै मे उपवास करण री नोबत आयोडी। सत प्रोळ मे जाय नै जै सीताराम कही। डावडी उठै ईज ऊभी ही सो चरी लैयनै मायनै गई। चरी थोडी सीक आधी ही। पण रावळै सू चरी पाछी बारै आई तो सफा खाली ही। खाली चरी सना नै पकडाय दी।

सत कोई नै बात नी कही। पण उण दिन सू रावळै मे आटो मागण नै जावणो वद कर दियो। ठाकर नै घणी रीस आई। उणा सत नै बुलायो अर गरजता थका कह्यो—सना, थे रावळै मे आटो मागण नै क्यू नी आवो ? सत की पडुत्तर नी दियो। ठाकर नैं ओरू घणी रीस आई। बोल्या—सता थानै लादडे गाम मे रैवणो है तो आटो मागण वास्तै रावळै मे आवणो पडैला। कान खोल नै सुणलो—लादडे मे रहसी तो जै सीताराम कहसी। सत दूजै दिन सू सै सू पैली खाली चरी लेय नै रावळै जावतो अर जै सीताराम कैयनै बूओ आवतो।



मुसीबत

दो साथी हॉल मे बैठ्या मजै सू पिक्चर देखै हा। एक साथी नै कोई बात याद म्राई ग्रर वो उदास व्हैग्यो। थोडी ताळ पछै वो उठ नै जावण लाग्यो तो दूजोडै साथी पूछ्यो—क्यू काई बात है।

—गजब व्हैग्यो यार ! पलडो साथी बोल्यो—म्हू म्हारो बटुवो तकियै नीचै भूल नै ग्रायग्यो।

—तो काई व्हैग्यो ? तू कैवै है नी कै थारो नौकर तो पक्को ईमानदार है।

—ग्रा ईज तो मुसीबत है यार ! वो बटुवो लेय नै म्हारी लुगाई नै सूप देला।

—तो ठीक है नी, इण मे मुसीबत री काई बात है ?

—तनै ठा कोनी यार, घायल री गत घायल जाणै। ग्रर साथी हॉल सू बारै जावतो निगै ग्रायो।



काईं - काईं छोडोला ?

ब्याव करण नै त्यार व्हियोड़ो जोड़ो एकान्त में ऊभो बाता करण लाग्यो—

—थे म्हारै वास्तै काई-काई त्याग कर सको ?

—तू म्हासू काई-काई त्याग करावणी चावै ?

—जे म्हू थारै सागै ब्याव करू तो थे दारू पीवणो छोड दोला ?

—छोड दू ला ।

—बीडी सिगरेट पीवणी छोड दोला ?

—छोड दू ला ।

—जुग्रो रमणो छोड दोला ?

—छोड दू ला ।

—दोस्ता सागै रखडतो फिरणो छोड दोला ?

—छोड दू ला ।

—ग्रौर काई-काई छोडोला ?

—थारै सागै ब्याव करण रो इरादो पण छोड दूंला ।



खीर री चिंता

पाच-छ बरस री ऊमा पोतारै पापा सागै बैठी रोटी जीमै ही। कनै ईज एक मेहमान पण आयोड़ा बैठो हो। पख-सगारी पूरी व्हियां पछै ऊमा बोली—उण कटोर मे काई है पापा ?

—उण मे खीर है बेटी। पापा लाड सू कह्यो—तू खीर खावैला ?

—ना पापा, म्हूं तो म्हारै यू ईज पूछू ! ऊमा हसती थकी बोली।

—ना भई की तो बात है अद ईज तो तू पूछै है, साची बात बताय दै ! पापा खुसामद करता कह्यो।

ऊमा माथो नचावती बोली—ये दिनू गै मम्मी नै कव हा नी कै खीर घणी सारी बणाईजे, एक खाऊ गीर आवण वाळो है। थोड़ी बणाई तो वो सगळी एकलो ईज खा जावैला।



हारट फेल

एकर एक कजूस सेठ रेलगाडी मे जात्रा करै हो कै उणरो बटुवो गुमग्यो। वो डाफाचूक व्हियोडो पोतारै साथी नै कैवण लाग्यो —यार म्हारो तो बटुवो गुमग्यो।

साथी बोल्यो—सगळी ठौड म्राछी तरिया देख तो लियो कै यू ई फालतू रोळो करै है ?

कजूस कैवण लाग्यो—सगळी ठौड देख लियो यार—सूट-केस मे कोनी, थैली मे कोनी, म्हारै कमीज री ऊपरली जेव मे कोनी, म्रर नीचली दोन्यू जेबा मे ई कोनी। म्रबै फगत एक बडी री जेब सभाळणी बाकी रही है।

—तो सभाळै क्यू नी यार ! साथी बोल्यो।

—सभाळू तो खरी, पण उण मे नी मिळ्यो तो म्हारो हारट फेल व्है जावैला।



सभा मे नीद

एक आम सभा मे कोई नेताजी भासण देवण न ऊभा व्हिया। नेताजी रै भासण मे कोई तत कोनी हो सो लोग सुणता सुणता बोर व्हैग्या। एक स्रोता नै तो नीद आयगी। वो कुरसी रै हत्थै माथै माथो टेक नै घोर खाचण लाग्यो। नेताजी नै आ बात अटपटी लागी। वै भासण देवै अर सुणण वाळा ऊंघ लेवै—आ किया व्है सकै! उणा भासण देवणो बद करनै बीच मे कह्यो—देखो जी! थारै कनै वैठ्या एक भाई साब नीद लेव है, वान थोडा जगाय दीजो।

स्रोता बोल्यो—वानै सुवाणिया ई आप ईज हो, इण वास्त जगावण रो काम पण आपरो ईज है, म्हारो कोनी।



लेता जाईजो

एक खाती बडो भगत आदमी हो। साधु सन्त री सेवा अर सत्संग करण रो उणनैं अणूतो सोक हो। गाम मे कोई साधु सत आवतो तो वो उणनैं बुलाय नैं भोजन जरूर करवातो। खातण उणरी इण आदत सू काठी धाप्योडी ही। पण खाती आगैं उणरी चालती कोनी।

एक दिन खाती कठै ई बारै गयोडो हो कै दो-च्यारेक मोड उणरै घरा आय पुगा। खातण वानैं नमस्कार करनैं रोवती थकी कैवण लागी—बापसी, आप तो भला पधारया। पण म्हारै घरधणी रो तो माथो खराब व्हैग्यो है। कोई पण मेहमान कै साधु-सत घरा आवै उण नै मूसळ लेय नैं मारण दोडै। पेली वारो किसो उम्दा सुभाव हो, अर अबै किसोक व्हैग्यो है। पण काई करा, सै करमा री बाजी है।

साधुडा आ सुणी तो उठ सू ततीसा मनाया। इतरक मे खाती घरा आयग्यो अर पूछण लाग्यो—कोई साधु-सत आपण घरा आया हा काई? खातण बोली—आया तो हा पण आय नै कैवण लाग्या कै म्हानै एक मूमळ री जरूरत है सो ओ त्यार कियोडो मूसळ म्हानै देयदे। म्हैं कह्यो—ओ मूसळ तो एक सेठ रो कैय नै त्यार करायोडो है, आपरै कोई दूजो त्यार कराय दाला।

माथै वे रीसा बळ नै बूग्रा गया।

ग्रा बात सुणता ई ख ती उणीज वखत मूसळ लेय नै साधुग्रा लारै दोडयो। वो अळगै सू ईज मूसळ ऊचो करनै हाका करण लाग्यो—बापसी, मूसळ लेवता पधारो! मूसळ लेवता पधारो!

मोडा देख्यो मार नाख्या, वै तो उठै सू जीव लेय नै नाठा सो पाछळ ई कोनी फेरी।



कवि सम्मेलन

रात री वखत एक ठौड कवि सम्मेलन रो ग्रायोजन हो। खामी ताळ पछै एक पताळ फोड कवि कविता पाठ करण नै उठग्रा। वै ऊचो मू ढो करनै कविता पाठ करण लाग्या तो करता ईज गया। थाडी ताळ गाढ राख्या पछै स्रोता बोर होवण लाग्या। इण वास्त एक एक करन धीरै धीरै सगळा ई खिसकग्या। फकत एक स्रोता जम न बठा रह्यो। कविराजा कविता पाठ पूरो करनै उण स्रोता नै साबासी देवता कह्यो—घणा रग है ग्रापनै, ग्राप कविता रा माचा पारखी हो! स्रोता नीचो माथो करनै बोल्यो—म्हू तो इण वास्तै बैठो हू कै जिण दरी माथै ग्राप ऊभा हो, वा म्हारी है।



पेनल्टी रो डण्ड

लोकल ट्रेन में भीड अणूती ही, इण वास्तै कॉलेज रा लडका अर लडकिया ऊभा-ऊभा जावै हा। लडका री टोळी एक कानी ऊभी ही अर लडकिया री दूजै कानी। लडका री टोळी मे सू एक गुडै टाईप लडकै नै कुचमाद सूझी सो उण अपूठी ऊभी एक लडकी री चोटी खाचली। दूजोडा सगळा लडका उणरै मूडै कानी देखण लाग्या तो वो बोल्यो—देखो काई हो रे, खतरै री वखत गाडी मे जजीर खेचण रो हरेक मुसाफर नै अधिकार है।

इतरैक मे उण लडकी पग मे सू चप्पल उतारी अर उणरै मूडै माथै दो तीनेक फटीडा जमावती बोली—पण गाडी मे बिना कारण जजीर खाचबा वाळै नै पेनल्टी रो डड ई भुगतणो पडै है।



दो वेरा किया दीसै

एक माखियै गामा रा करसा एक साख मे ईज मस्त रैवै। पण कदेई काळ करवगो व्है जावै जद अठी-उठी आगा-नेड़ा जाय नै वेरा माथै करसण करै। इण भात ढोर डागरा नै बरस बारै काढ लेवै अर थोड़ा-घणा दाणा ई पैदा कर लेवै। पण मोकळी वार ऐ वेरा वानै मूघा पडै। कारण कै वेरा माथै खरचो अर लाग-बाग इतरो अणू तो हुवै कै करसो उलटो करजदार बण जावै।

एकर एक करसै दुकाळ पड जावण रै कारण सगा गिना यता रै गाम मे जाय न वेरो कियो। साख पाका खरच खातो लाग-बाग हासल पूमल अर लेण-देण रो हिमाब व्हियो तो माथै करजदारी व्हैगी। गरीब करसो दुकाळ री मार सू पेलीज अधमूवो व्हियोडो हो अर अबै इण करजदारी सू अगा ई ढोळै बैठग्यो। माथै माथै फाटोडो चीथरो, डील सफा उघाडो, कारिया लाग्योडो धोतडी अर पगा मे फाटोडा लीगतरा। देखता ई दया आवै जिसो सरूप व्हैग्या।

सरम वाळो आदमो हो, दूजो कोई रस्तो नी देख्यो तो रात रा उठै सू छानै-छानै नाठग्यो। मारग मे रात पडगी। साम्हो

एक जैन मंदिर निजर आयो तो मायनै छिप नै बैठग्यो। अंधारै मे अठी-उठी हाथ फेरयो तो एक टणकी मूरत निगै आई। करसै जाण्यो कोई आदमी बैठो है, उण चोफैर हाथ फेर नै निसासा नाखता कह्यो—भाया, थै दो वेरा किया दीसै। म्हैं तो एक वेरो कियो हो, इण कारण थोडा घणा चीथरा तो म्हारै डील माथै है, अर तू तो सफा यू ईज बैठो है।



अक्सीर इलाज

दिन भर रो, कायो व्हियोडो डॉक्टर पोतारै घर मे आराम सू सूतो हो कै आधीक रात रा टेलीफोन री घंटी बाजी टणण टणण करती। डॉक्टर रीसा बळतो उठयो अर रिसीवर कान रै लगायो। कोई मरीज बोलतो हो- डॉक्टर साब ! म्हनै नींद बिलकुल नी आय री है।

डॉक्टर ठीमरपणै सू कह्यो—आप रिसीवर कान रै अडायोडो राखजो, म्हू आप नै हालरियो (लोरी) सुणाय दू। डॉक्टर री लुगाई बोली—किणनै लोरी सुणावो हो ? डॉक्टर रीसा बळतै कह्यो—थारै बाप नै।

❖

आउट ऑफ स्टाक

प्राईमरी स्कूल मे पढण वाळो एक टाबर पोतारी मा कनै बैठ्यो हो। उणनै बिस्कुट खावण री मन मे आई अर वो मा कनै मागण लाग्यो।

मा बोली—बेटा बिस्कुट तो आज आउट ऑफ स्टॉक है।

टाबर बात नै समझ्यो कोनी। वो पूछण लाग्यो—मा आउट ऑफ स्टाक किणनै केवै ?

मा उणन समझावता थका कह्यो—बेटा कोई चीज घर मे नही रहै जद वा आउट ऑफ स्टाक बाजै। ज्यू क आज बिस्कुट घर मे नी है ता वै आउट ऑफ स्टाक बाजै।

टाबर बात नै समझग्यो। थोडी ताळ में वारो एक पाडोसी आयो। टाबर नै पूछ्यो—थारा पापा कठै है रे ?

—वै तो आउट ऑफ स्टाक है। टाबर बडै ठाट सू बोल्यो।



गप्पी चित्रकार

दो चित्रकार ग्रव्वल दरजै रा गप्पी हा। एक दिन व दोयू जणा भेळा व्हिया तो गप्पा ठेलण लागा। एक जणो बोल्यो — यार काले तो एक मुसीबत ऊभी व्हैगी। म्हैं एक बगीचै रो चित्राम बणाय नै भीत माथै टेरियो तो मधमाखिया उणनै साचैलो बगीचो समझ लियो अर म्हारो कमरो मधमाखिया सू भरीजग्यो।

दूजोडो बोल्यो — ग्रा तो मामूली बात है यार ! म्हारी मुसीबत सुणै तो थारा कान खुल जावै। म्हैं एक चित्राम बणाया — बरफ सू ढक्योडै परबता रो। उणनै एक गिराक मोल लेग्यो अर कमरै मे टेर दियो। उण कमरै मे ईज एक टाबर पालणै मे सूतो हो, घटै भर म उणरी मा आय नै सभाळै तो टाबर ठडो टीप।



सातरी भूल

एकर एक इस्पेक्टर साब कोई स्कूल रो मुम्रायनो करण न एक क्लास मे पूगा तो एक खटरो सीव छोकरो ऊभो फालतू बकवास करै हो अर दूजा सगळा ई छोकरा हसै हा। इस्पेक्टर उण बकवासी छोकरै नै कान पकड़ नै साथै लेग्या अर दूजोडी क्लास मे एक कानी ऊभो कर दियो। कह्यो—अठै चुपचाप ऊभो रहीजै। हिलग्यो तो जूत उडैला। छोकरो आठै री मूरत व्है ज्यू ऊभो व्हैग्यो अर इस्पेक्टर पोतारै काम मे लागग्यो। थोडी क जेज में एक नैनो छोकरो उठै आयो अर कैवण लाग्यो—म्हारै माटसाब नै भेजो मा, सगळी क्लास हाका करै है।

—किसा माटसाब ?—इस्पेक्टर पूछ्या।

—वै चुपचाप खूणै मे ऊभा। छोकरै कह्यो।

❖

नक्सो

प्राईमरी स्कूल मे मास्टरजी टाबरा नै भारत री नक्सो बतावै हा। उणा समझावता थका कह्यो—ओ आपणो रास्ट्र है, इणरै मायनै मोकळा ई राज्य है। वै न्यारै-न्यारै रगा सू बतायोडा है, देखो—राजस्थान, पजाब, गुजरात, महारास्ट्र अर मध्य प्रदेश। यू आपणै देस री राजधानी दिल्ली है पण इण राज्या री न्यारी-न्यारी राजधानिया हैं। बात समझ मे आई कै नी ?

एक टाबर ऊभो होय्नै बोल्यो—दूजी तो सगळी बाता सम मे आयगी सा, फगत एक बात समझ मे नी आई।

मास्टरजी पूछ्यो—वा काई ?

—वा [illegible] बात, कै एक रास्ट्र रै मायनै महारास्ट्र किया व्है सकै ? आ उल्टी बात किया ? आ समझ मे कोनी आई।

फेरा पाछा खायला

सियाळै री घोर अंधारी रात ही। सेठ-सेठाणी पोतारी हवेली में सूता हा कै मायन एक चोर आयो। आवती ऊंघ होवण सूं सेठाणी तो चोर खावँ ही पण सेठ की खुडको सुण न जागग्या। उणा सूता सूता ईज आरूया आधी मींच्या, आधी उघा ड्या देख्यो तो ओळ में एक आदमी ऊभो। वो होळै होळै चाल नै आगणै में आया कै सेठ जोर सूं खखारो कियो। चोर डाफाचूक व्हैग्या। कन ईज एक मोटा थांभो हो सो उतावळ में उणरै चापळ न ऊभो व्हैग्यो।

सेठ होळै होळ उठ्या, पाणो पीयो अर सेठाणी नैं जगा वना कह्यो—गीगै री धाजी! ए गीगै री धाजी! उठ आज तो म्हूनै ब्याव करण री मन में आई है सो थारै सागै पाछा फेरा खावू ला। सेठाणी बोली—माथो खराब व्हैग्यो है कै काई बात है? रात आधी बीती, पातानै ऊंघ नी आवै तो दूजा नै तो सूवण दो! पण सेठ मान्या कोनी। छेवट सेठाणी नैं हार खाय नैं उठणो पड्यो। सेठ पोतारै साफै री छेड़ाबदी बणाई अर सेठाणी नैं कह्यो—आज आपां आम्हा साम्हा फेरा खावाला,

आगै लारै चाल नै तो फेरा एकर खाय लिया। इण वास्तै तू इण थाभै रे अठी होय नै आव अर म्हूं उठी होय नै आवूं ला।

इण भात सेठजी फेरा खाय, चोर नै जरू बाथ नै पछै पाडोसिया नै हाको कियो। चोर बापडो बाधोडो, नीचो माथो किया ऊभो हो। सेठजी बोल्या—फेरू आईजे बेटा!



गधै सागै ब्याव

ब्याव विहुया रै दो-च्यार बरस पछै धणी-लुगाई आपसरी मे कूटीजण लाग्या। धणी बोल्यो—अबै आज तू मनै बतावण नै बैठी है कै थारै सागै कई आछे-सू आछा मोट्यार ब्याव करण नै त्यार हा। जे आ बात ही तो पछै जिण पैलडै गधै थारै साम्ही ओ प्रस्ताव राख्यो, उणर सागै ईज थै ब्याव क्यूं नी कर लियो?

लुगाई बोली—उणरै सागै ईज तो म्हैं ब्याव कियो है अर आ ईज तो मुसीबत है।



खातण वालो दीवो

एक गामडे मे खाती रो एक घर ईज हो। गामडो मोकै माथ ग्रायोडो हो इण वास्तै उठै होय नै वटाऊ घणा वैवता। खाती रै ई पावणो-सगे घणो लागतो। नित रोज एक नै एक मेहमान त्यार रैवतो। इण वास्तै खाती ग्रागता मागता करतो करतो ग्रर खातण पीसती-पावती थाकगी ही।

एक दिन रोगी रो वखत व्हिया खाती पोतारी खानगेड मे बैठयो काम काज करै हो कै एक मेहमान ग्राय पूगो। उणरै योडीक जेज पैली उण एक मेहमान नै रवानै कियो ईज हो।

मेहमान ग्रावता ई वोल्यो—राम राम सा!

—राम राम सा, राम राम! पधारो, विराजो! खाती कह्या ग्रर पछ पोतारै काम मे लागग्यो। थोडी क ताळ मे उण माथो ऊचो करनै खातण नै हाको करता कह्यो—मह्या रा दीवो कर दीजे ए! सुण्यो कै नी? मेहमान नै ग्रचू भो व्हियो कै मह्या रा दीवो करण री वात ग्रो ग्रवार सू ईज किया कवै है? उण खाती नै इण वाबत पूछयो तो खाती वोल्यो—काई बताऊ सा करम फूटोडा व्है जद इसो मिनख मिळै। ग्रा इतरी ग्राळमी है कै म्हू इण

नै अबै सूं ईज दो तीन वार दीवो करण री बात चेतावूं ला जद कठैई जायनै आ सझ्या रा दीवो नीठ करैला।

मेहमान नै आकरी भूख लाग्योड़ी ही। उण देख्यो कै अठै तो भूखा मरण रो सरंजाम है। जिकी लुगाई अजै चेताया सूं सझ्या रा दीवो करै वा स्यात म्हारै वास्तै रोटिया तो कालै दिनूं गै बणा-वैला। वो रामा-सामा करनै उठै सूं रवानै व्हैग्यो।



बोलती बंद

रमेस नाम रो एक रुळट छोकरो कॉलेज रो विद्यार्थी हो। उणरै मारगन रा दो च्यार ओरूं उणरा यार दोस्त पण हा। आ चडाळ चौकड़ी कालेज री छोरिया नै परेशान करती।

एक दिन आ चौकड़ी आवती ही क सड़क माथै कॉलेज री छोरिया साम्ही मिळगी। रमेस एक छोरी कानी इसारा करतो बोल्यो—चांद तो रात रा चमकै, आज दिन रा किया निकळग्या ?

छोरी पड़ुत्तर दियो—घुग्घु (उल्लू) तो रात रा बोलै आज दिन रा किया बोलण लागग्यो ?



आछी सीख

किसनू रै पिताजी पोतारै दोस्त आगै किसनू री सिकायत करता कैवे हा—म्हारै तो छोरो सफा रोळ व्हैग्यो है माटो, दिन भर गळी मे रोवतो फिरै अर डळियाग छोरा सागै गिली डंडा खेलै। इणनै पढबा रो कैवा तो बुखार चढ अर जे माडाणी किताब दय नै बिठाय दा तो बैठो रैवेला पण आखर एक नी पढै।

जिण वखत ऐ बातां चालै ही, किसनू कान मे आंगळिया घाल नै ऊभो हो। उणरै पिता रीसा बळ नै पूछ्यो—यूं क्यूं ऊभो है रे छोरा ?

—म्हारै माट साब कह्योहा है कै कोई री बुराई नी सुणणी। किसनू बोल्यो।



खिसक गयो खुमाण

एकर एक बारठजी कोई दूजे गाम गया। उठै वा नै एक राजपूत मिळयो। उण बारठजी न घरा चालर रोटो जीमण री मनवार करता कह्यो—आप अठै ईज बिराजो, म्हू अबार थोडीक जेज मे काम निवेड नै पाछो आऊ। आपा सागै सागै घरा चालाला। बारठजी उठै ईज बैठग्या अर उणरी बाट जोवण लाग्या। पोहरा रा पोहर बीतग्या पण वो तो माटो पाछो बाव डियो ईज कोनी। बारठजी रै पेट मे कूकरिया बोलण लाग्या। वै आछी तरिया तपग्या।

मारग वैवतै कोई ओळखीतै आदमी बारठजी नै उठै बैठा देख्या तो पूछ्यो—बाजीसा, आज अठै किया बिराज्या हो ?

बारठजी बोल्या—

बुग छाणै बैठाय कर
जबुक चुमको जाण
मार घसक मनवार री
खिसक गयो खुमाण

इण कारण अठै बैठो हू भाया।

आगलो आदमी बारठजी री बात नै समझ्यो कोनी।

मारटजी उण नै समझावतो थका कह्यो—सियाळिया रै बुग पड़ जावै जद वो मूंडै मे छाणो पकड़र कोई नाडै मे उतर नै इण वास्तै घुमाको लगावै क जिण सू बुगा सू सारो छूट जावै। बुग भेळा ई भेळा होय नै छाणै माथै बैठ जावै। छाणो पाणी माथै तिरतो रैव भर सियाळियो घुमाको मार नै बारै निकळना ई तेतीसा मनावै। बुग छाणै माथै बैठ्या उणरी वाट जोयबो करै। वा गागण गत आज म्हारी ह्योड़ी है, माया।



गायन

एकर एक आदमी पोतारै साथी र उठै मिळण नै गयो। साथी आछो गवैयो हो'। जिण वखत वो उणरै घरा पूगो, साथी पलग माथै सूतो हो अर उणरो एक नैनो टाबर कनै बैठ्यो रमै हो। थोड़ी ताळ वतळ ह्विया पछै साथी सूतो सूतो ईज गायन सुणावण लाग्यो। एक दो गायन सुणाय नै वो ऊधो सोयग्यो अर फेरू गायन सुणावण लाग्यो। सुणण वाळो बोल्यो—तू यू काई कर है ? कदई सूवो सूवै अर कदैई ऊधो सूव, यू पसवाड़ा काई फेरे है ?

टाबर बोल्यो—भकल ऐ पसवाड़ा कोनी फेरै, भा तो चूड़ी पलटीजै है।

